का बँटवारा हुआ, तब यह स्वाभाविक था कि उसके घाव थे। एक समय ऐसा भी था जब हम इस देश में दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से फ़साद देखते थे, riots भी देखते थे, लेकिन आज की तारीख में लोगों में इनके प्रति जागरुकता भी बढ़ी है और accountability भी बढ़ी है। सौभाग्य से आज हमें उस बीमारी से काफी हद तक छुटकारा मिला है। आज ये सभी समाज देश को दृष्टि में रखते हुए, मन में रखते हुए सोचते हैं कि हमें आपस में मिलकर प्रगति कैसे करनी है और कैसे हमें विश्व के अंदर एक आधुनिक समाज बनाना है? एक तरफ जब हम यह कल्पना करते हैं कि हम दुनिया में व्याप्त बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेजी से चलने वाली अर्थव्यवस्था बनें, तब हमारे देश के अंदर शांति, सद्भावना और मेल-जोल का माहौल भी बना रहना चाहिए। इसके साथ-साथ एक ऐसा समाज भी हो, जिसके अंदर compassion की भावना भी रहे। मैं विशेष रूप से कहूंगा कि कई ऐसे अनुभव भी आए हैं, जिनमें अगर किसी प्रांत में एक-दूसरे के प्रति राजनीतिक हिंसा की घटना होती है, वह चाहे आतंकवाद की वजह से होती है या किसी की धार्मिक भावना का उल्लंघन कर दिया गया, उसको लेकर हिंसा की घटना होती है, तो हम यह समझ लें कि आज़ादी के सत्तर साल बाद भी एक देश, जो पूरे विश्व के अंदर बहुत आगे बढ़ने की कल्पना रखता है, उस देश में ऐसी घटनाओं के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए और उस देश को इन घटनाओं से मुक्ति मिलनी चाहिए।

उपसभापति जी, आज का यह दिन इतिहास का एक प्रतिनिधि दिन है। हम सब इस देश को मजबूत, न्यायसंगत और आर्थिक दृष्टि से एक प्रगतिशील देश बनाएं, इसके लिए आज एक प्रण लेने का समय है। मैं आपका, माननीय सभापति जी और सभी सदस्यों का आभारी हूं कि आप सभी ने सहमति व्यक्त की है कि हम इस दिन यह प्रस्तावना करें कि देश को इस दिशा की ओर लेकर जाएंगे। मैं अंत में स्वयं को भी इस भावना के साथ पूर्ण रूप से जोड़ता हूं, धन्यवाद।

Welcome to Parliamentary Delegation from Seychelles

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Hon. Members, we have with us, seated in the Special Box, Members of a Parliamentary Delegation from Seychelles, currently on a visit to our country under the distinguished leadership of hon. Partick Pillay, Speaker of the National Assembly of Seychelles.

On behalf of the Members of the House and on my own behalf, I take pleasure in extending a hearty welcome to the leader and other members of the delegation and wish our distinguished guests an enjoyable and fruitful stay in our country. We hope that during their stay here, they would be able to see and learn more about our Parliamentary system, our country and our people, and that their visit will further strengthen the friendly bonds that exist between India and Seychelles. Through them, we convey our greetings and best wishes to the Parliament and the friendly people of Seychelles.

75th Anniversary of the Quit India Movement — *Contd*.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, the Leader of the Opposition, Shri Ghulam Nabi Azad.

विपक्ष के नेता (श्री गुलाम नबी आज़ाद): माननीय डिप्टी चेयरमैन सर, मैं अपने आपको दो कारणों से बहुत ही खुशकिस्मत समझता हूं। एक कारण तो यह है कि आज भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है और मेरे जैसे छोटे आदमी को उन महान नेताओं को श्रद्धांजिल अर्पित करने का अवसर मिला है। मेरी दूसरी खुशकिस्मती यह है कि मैं उस दल से संबंध रखता हूं, जिस दल के नेतृत्व में — मैं नेतृत्व की बात कर रहा हूं, पार्टिसिपेन्ट्स बहुत थे... महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना आज़ाद, सुभाष चंद्र बोस एवं और भी कई महान नेता, औरतें, मर्द, राइटर्स, किसान, मज़दूर उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम सब तरफ से जुड़ गए थे, जिन्होंने इस लड़ाई में हिस्सा लिया, अपनी जानों की कुरबानियां दीं और जिनके कारण आज हम स्वतंत्र भारत के नागरिक हैं।

सर, वैसे अपनी-अपनी individual capacity में बहुत सारे स्वतंत्रता सेनानियों ने काम किया है, लेकिन हिस्ट्री के दो ऐसे पन्ने हैं, जिन्हें लोग कभी भूल नहीं सकते। एक तो 1857 को, जिसे हम भारत की जंग-ए-आज़ादी की पहली लड़ाई कहते हैं। हालांकि व्यक्तिगत तौर पर पहले भी लोगों ने स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी, जिसमें से तीन हीरो उभर कर आए, मंगल पांडे, रानी लक्ष्मी बाई और बहादुर शाह ज़फर। अपने-अपने तरीके से उन्होंने कुरबानियां दीं और तब से लेकर 1947 तक लाखों लोगों ने अपनी कुरबानियां दीं। कुछ नाम ऐसे हैं, जो हरेक इन्सान की ज़बान पर हैं, चाहे कोई ज्यादा पढ़ा-लिखा हो या नहीं हो अथवा किसी ने हिस्ट्री पढ़ी हो या न पढ़ी हो। देश के ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों को भी आज मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं, जैसे भगत सिंह, चंद्र शेखर आज़ाद, अश्फाक उल्ला खां, राम प्रसाद बिस्मिल, गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं को कौन भुला सकता है? इन सबने अपने-अपने तरीके से इस आंदोलन को नेतृत्व दिया, लीडरशिप दी। कुछ लीडर्स ऐसे भी थे, जो शुरू से आखिर तक, 1947 तक जिन्दा रहे और लगातार उनका योगदान बना रहा। मैं कांग्रेस के उन लीडर्स और वर्कर्स को भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, जिन्होंने 1885 से लेकर निरंतर संघर्ष किया और बाद में महात्मा गांधी और पंडित नेहरू के नेतृत्व में इस लड़ाई को असली रूपरेखा दी।

इतिहास बहुत बड़ा है, हर चीज़ को बताने में समय लगेगा, लेकिन मेरे ख्याल में 1940 से लेकर 1946-47 के बीच का समय, हमारे भारत के लिए एक ऐतिहासिक चैप्टर था। हिन्दुस्तान की आज़ादी को 1947 से पहले के आखरी 6-7 सालों ने जो शक्ल दी, वह एक इतिहास बन गई। जैसा माननीय नेता सदन ने बताया, मार्च, 1942 वर्ल्ड वॉर चल रही थी और हर तरफ एक ख़ौफ था, भय था, डर था। दुनिया की बड़ी ताकतें उस युद्ध में जुड़ गई थीं। इधर से जापान हमारे देश के ईस्टर्न पार्ट्स के नज़दीक पहुंच चुका था और दरवाज़ा खटखटाने को था। जब दुनिया की बड़ी ताकतें विश्व युद्ध की तरफ जा रही थीं, उस समय में महात्मा गांधी और उनके साथियों का यह निर्णायक निर्णय लेना, एक महत्वपूर्ण फैसला करना, जिसको हम कई भाषाओं में 'go for the kill' कहते हैं। जितनी 1942 में Congress Working Committee की मीटिंग्स हुईं और सेशन हुये, उतने शायद कभी नहीं हुये। एक तरफ ब्रतानिया चाहता था कि हम उनकी मदद करें, तभी उनके मिनिस्टर Sir Stafford Cripps को नये proposal के साथ इंडिया भेजा गया, नया Constitution बनाने के लिए, लेकिन उसको कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने ठुकरा दिया। वे शायद चाहते थे कि दो में से एक न एक तो मान ही जाएगा। उसको दोनों पार्टीज़ ने ठुकरा दिया और मई, 1942 में गांधी जी ने फिर एक call दी, 'Leave India to God' की, हमें माफी

दे दो, छोड़ दो। फिर जुलाई, 1942 में कांग्रेस पार्टी मिली, उसने resolution pass किया कि अब तो फौरी तौर पर British Rule का खात्मा होना चाहिए और यह भारत के लिए भी अच्छा है और United Nations के लिए भी अच्छा है। 5 अगस्त, 1942 को Congress Working Committee की मीटिंग Bombay में हुई और शाम को महात्मा गांधी जी ने Working Committee की मीटिंग के बाद Parel, Bombay में एक public meeting की और उसको उस Working Committee की मीटिंग के बारे में बताया कि अब अंग्रेजों को भारत छोड़ना ही होगा, उसके अलावा कोई चारा नहीं है। उन्होंने दोनों को, ग्रेट ब्रिटेन और United States को कहा कि आप इसमें दखल दे दो और हिन्दुस्तान को आज़ाद करके अपना ally, अपना सहयोगी बनाओ। एक गुलाम ally की तुम बात करते हो, तुम हमको स्वतंत्र करो और हमारा सहयोग लो। उसका United Nations ने तो जवाब नहीं दिया और 6 अगस्त को Sir Stafford Cripps ने फिर अपना resolution दोहराया, जो उन्होंने पहले बताया था, लेकिन उसको कांग्रेस ने फिर ठुकराया और फिर 7, 8 और 9 अगस्त की बात आती है। 7 अगस्त को Bombay में जो सेशन हुआ, उसमें करीब दस हजार डेलिगेट्स के लिए जगह बनाई गई। उस मैदान में 250 AICC के मेम्बर्स थे और 5,000 लोग पंडाल से बाहर रहे। यह एक तारीखी दिन था, जिसमें पुराने resolutions के बारे में, जितने भी उस साल resolutions पास हुए, उस वक्त के कांग्रेस प्रेज़िडेंट मौलाना आज़ाद ने उनको AICC के सामने रखा। वहां पर resolutions move हुए, main resolution पंडित जवाहरलाल नेहरू ने move किया, second सरदार पटेल जी ने किया, लेकिन असली हीरो महात्मा गांधी थे, जिन्होंने 'Do or die' का नारा दिया, "करो या मरो" का नारा दिया, 'Quit India' तो था, "भारत छोड़ो" तो था, लेकिन अपने workers से उन्होंने जीने और मरने की बात कही और कहा कि ज्यादा देर तक गुलामी की जंजीरे बर्दाश्त नहीं की जा सकती हैं। अब हमें या तो जिंदा रहकर आजादी हासिल करनी होगी या मरना होगा। मेरे ख्याल में यह गांधी जी का सब से बड़ा फैसला था क्योंकि वह हमेशा non-violence की बात करते थे। हालांकि उन्होंने उस वक्त भी कहा कि यह non-violence के तरीके से होना चाहिए, उन्होंने वह रास्ता नहीं छोड़ा, लेकिन उन्होंने कल की आधी रात को "Quit India" का नारा दिया।

महोदय, मैं कल की रात हुई घटनाओं का उल्लेख नहीं करना चाहता, लेकिन कल भी बिल्कुल वही रात लग रही थी क्योंकि हम सुबह तक जागते रहे। महोदय, आज अवसर दूसरा है, मैं उसमें राजनीति को नहीं लाना चाहता हूं, लेकिन कल की रात भी वही थी और दिन भी वही था। उस समय रात को जब यह resolution पास हुआ और महात्मा गांधी ने यह clarion call दी, गांधी जी से लेकर तमाम Working Committee के members, कांग्रेस प्रेसीडेंट, जवाहर लाल नेहरू, और सरदार पटेल तक सभी को उस रात गिरफ्तार किया गया और 9 अगस्त की तारीख को कांग्रेस को ban कर दिया गया और अखबारात को ban किया गया। उस वक्त National Herald अखबार था, जिसमें पंडित जवाहर लाल नेहरू लिखते थे, "Young India" और "हरिजन" के लिए महात्मा गांधी लिखते थे, उन सभी को ban किया गया। अब यह दूसरी बात है कि आज उन्हीं अखबारों की जगह के लिए हमें लड़ायी लड़नी पड़ रही है, जोकि भारत की आज़ादी के mouthpiece थे। महोदय, खास बात यह थी कि सभी नेताओं की गिरफ्तारी के बाद भारत की जनता ने चार्ज संभाला, अरुणा आसफ अली ने झंडा फहराया। महोदय, उस समय चार्ज उस समय के किसानों, मजदूरों, नौजवानों और university व college के students ने संभाला। मैं कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी को भी बधाई देना चाहता हूं क्योंकि जब उन्होंने देखा कि कांग्रेस के सभी नेता जेल में हैं और इस वक्त देश को उनकी बहुत जरूरत है, उन्होंने उस समय पूरा

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

योगदान दिया। हालांकि उनके कांग्रेस नेतृत्व के साथ बड़े मतभेद रहते थे, लेकिन "Quit India Movement" के call पर उन्होंने सोचा कि इस वक्त हमें देश के साथ वफाई करना है और उन्होंने उस समय कांग्रेस के workers को दिशा देने में योगदान दिया। महोदय, लाखों लोग जेल गए, हजारों लोग मारे गए और देश ने एक बहुत बड़ी कुर्बानी दी। मैं आज इस विषय में भी नहीं जाना चाहता कि उस समय कौन पार्टीज इस से बाहर रहीं और किन पार्टीज ने विरोध किया। वह एक इतिहास है और आज Wikipedia, Google पर आपको सारी जानकारी मिल जाएगी कि कौन उस इतिहास का हिस्सा था या नहीं था।

†**قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی آزاد):** مانیئے ڈپٹی چئیرمین سر، میں اپنے اپّ کو دو وجوہات سے بہت خوش قسمت سمجھتا ہوں۔ ایک وجہ تو یہ ہے کہ ا ج بھارت چھوڑو تحریک کی 75 ویں سالگرہ منائی جارہی ہے اور میرے جیسے چھوٹے ا دمی کو ان مہان نیتاؤں کو خراج عقیدت پیش کرنے کا موقع ملا ہے۔ میری دوسری خوش قسمتی یہ ہے کےمیں اس دَل سے سمبندھ رکھتا ہوں، جس دَل کی قیادت میں۔ میں قیادت کی بات کررہا ہوں، پارٹیسیپینٹس بہت تھے۔۔۔

مہاتما گاندھی، پنڈت جواہر لعل نہرو، سردار پٹیل، مولانا ا زاد، سبھاش چندر ،بوس، اور بھی کئی مہان نیتا، عورتیں، مرد، رائیٹرس، کسان، مزدور، اتّر، دکشن پورب پچھم سب طرف سے جڑگئے تھے، جنہوں نے اس لڑائی میں حصہ لیا، اپنی جانوں کی قربانیاں دیں اور جن کی وجہ سے ا ج ہم ا زاد بھارت کے ناگرِک ہیں۔

سر، ویسے اپنی اپنی individual capacity میں بہت سارے سوتنترتا سینانیوں نے کام کیا ہے، لیکن ہسٹری کے دو ایسے پننے ہیں، جنہیں لوگ کبھی بھول نہیں سکتے۔ ایک تو 1857 کو، جسے ہم بھارت کی جنگ ا زادی کی پہلی لڑائی کہتے ہیں۔ حالانکہ ذاتی طور پر پہلے بھی لوگوں نے سوتنترتا کی لڑائی لڑی، جس میں سے تین ہیرو ابھر کر ا ئے، منگل پانڈے، رانی لکشمی بائی اور بہادر شاہ ظفر۔ اپنے اپنے طریقے سے انہوں نے قربانیاں دیں اور تب سے لیکر 1947 تک لاکھوں ،لوگوں نے اپنی قربانیاں دیں۔ کچھ نام ایسے ہیں، جو ہر ایک انسان کی زبان پر ہیں چاہے کوئی زیادہ پڑھالکھا ہو یا نہیں ہو اور کسی نے ہسٹری پڑھی ہو یا نہ پڑھی ہو۔ دیش کے ایسے سوتنترتا سینانیوں کو بھی ا ج میں اپنی طرف سے اور اپنی پارٹی کی طرف سے خراج عقیدت پیش کرنا چاہتا ہوں، جیسے بھگت سنگھ، چندر شیکھر ا زاد، اشفاق لله خاں، رام پرساد بسمل، گوپال کرشن گوکھلے، بال گنگا دھرتلک، لالہ

† Transliteration in Urdu script.

لاجپت رائے، سبھاش چندر بوس جیسے نیتاؤں کو کون بھلا سکتا ہے؟ ان سب نے اپنے اپنے طریقے سے اس تحریک کو قیادت دی، لیڈرشپ دی۔ کچھ لیڈرس ایسے بھی تھے، جو شروع سے ا خر تک، 1947 تک زندہ رہے اور لگاتار ان کا یوگدان بنارہا۔ میں کانگریس کے ان لیڈرس اور ورکرس کو بھی اپنا خراج عقیدت پیش کرتا ہوں، جنہوں نے 1885 سے لیکر نرنتر سنگھرش کیا اور بعد میں مہاتما گاندھی اور پنڈت نہرو کی قیادت میں اس لڑائی کو اصلی روپ ریکھا دی۔

اتیہاس بہت بڑا ہے، ہر چیز کو بتانےمیں وقت لگے گا، لیکن میرے خیال میں 1940 سے لیکر1946-47 کے بیچ کا وقت، ہمارے بھارت کے لیے ایک ایتیہاسک چیپٹر تھا۔ ہندستان کی ا زادی کو لیکر 1947 سے پہلے کے ا خری 6-7 ،سالوں نے جو شکل دی، وہ ایک اتیہاس بن گئی۔ جیسا مانیئے نیتا سدن نےبتایا مارچ 1942 ورلڈ وار چل رہی تھی اور ہر طرف ایک خوف تھا، ڈر تھا۔ دنیا کی بری طاقتیں اس جنگ میں جڑگئ تھیں۔ ادھر سے جاپان ہمارے دیش کے ایسٹرن پارٹس کے نزدیک پنچ چکا تھا اور دروازہ کھٹکھٹانے کو تھا۔ جب دنیا کی بڑی طاقتیں عالمی جنگ کی طرف جارہی تھیں، اس وقت میں مہاتما گاندھی اور ان کے ساتھیوں کا یہ نرنائیک فیصلہ لینا، ایک اہم فیصلہ کرنا، جس کو ہم کئی بھاشاؤں میں 'go for the kill' کہتے ہیں۔

جتنی 1942 میں کی Congress Working Committee میٹنگس ہوئیں اور سیشن ہوئے، اتنے شاید کبھی نہیں ہوئے۔ ایک طرف برطانیہ چاہتا تھا کہ ہم ان کی مدد کریں، تبھی ان کے منسٹر Sir Stafford Cripps کو نئے proposal کے ساتھ انڈیا بھیجا گیا، نیا کانسٹی ٹیوشن بنانے کے لیے، لیکن اس کو کانگریس اور مسلم لیگ دونوں نے ٹھکرادیا۔ وہشاید چاہتے تھے کہ دو میں سے ایک نہ ایک تو مان ہی جائے گا۔ اس کو دونوں پارٹیز نے ٹھکرادیا اور مئی 1942 ، میں گاندھی جی نے پھر ایک call دی ، 'Leave India to God' کی، ہمیں معافی دے دو، چھوڑ دو۔ پھر جولائی، 1942 میں کانگریس پارٹی ملی، اس نے resolution پاس کیا کہ اب تو فوری طور پر برٹش رول کا خاتمہ ہونا چاہیئے اور یہ بھارت کے لیے بھی اچھا ہے اور یونائیٹیڈ نیشن کے لئے بھی اچھا ہے۔ پانچ اگست 1942 کو کانگریس ورکنگ کمیٹی کی میٹنگ بمبئی میں ہوئی اور شام کو مہاتما گاندھی جی نے ورکنگ کمیٹی کی میٹنگ کے بعد Parel, Bombay میں ایک پبلک میٹنگ کی اور اس ورکنگ کمیٹی کی میٹنگ کے بارے میں بتایا کہ اب انگریزوں کو بھارت چھوڑنا ہی ہوگا

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

اس کے علاوہ کوئی چارہ نہیں ہے۔ انہوں نے دونوں کو، گریٹ برٹین اور یونائیٹڈ اسٹیٹس کو کہا کہ آپ اس میں دخل دے دو اور ہندستان کو آزاد کرکے اپنا ally ، اپنا سبیوگی بناؤ۔ ایک غلام ally کی تم بات کرتے ہو، تم ہم کو آزاد کرو اوربمارا سبیوگ لو۔ اس کا یونائیٹڈ نیشنس نے تو جواب نہیں دیا اور چھ اگست کو Sir Stafford Cripps نے پھر اپنا ریزولیوشن دوبرایا، جو انہوں نے پہلے بتایا تھا، لیکن اس کو کانگریس نے پھر ٹھکرایا اور پھر 7, 8 اور 9 اگست کی بات آتی ہے۔ سات اگست کو بمبئی میں جو سیشن ہوا اس میں قریب دس ہزار ٹیلی گیٹس کے لیے جگہ بنائی گئی۔ اس میدان میں 250 AICC ممبرس تھے اور 5,000 لوگ پنڈال سے باہر رہے۔ یہ ایک تاریخی دن تھا، جس میں پرانے ریزولیوشن کے بارے میں، جتنے بھی اس سال ریزولیوشنس پاس ہوئے، اس وقت کے کانگریس پریزیڈینٹ مولانا آزاد نے ان کو AICC کے سامنے رکھا۔ وہاں پر resolutions move ہوئے، main resolution پنڈت جواہر لعل نہرو نے move کیا، second سردار پٹیل جی نے کیا، لیکن اصلی ہیرو مہاتما گاندھی تھے، جنہوں نے 'Do or die' کا نعرہ دیا، ''کرو یا مرو'' کا نعرہ دیا، 'Quit India' تو تھا، ''بھارت چھوڑو'' تو تھا، لیکن اپنے

ورکرس سے انہوں نے جینے اور مرنے کی بات کہی اور کہا کہ زیادہ دیر تک غلامی کی زنجیریں برداشت نہیں کی جاسکتی ہیں۔

اب ہمیں یا تو زندہ رہ کر آزادی حاصل کرنی ہوگی یا مرنا ہوگا۔ میرے خیال میں یہ گاندھی جی کا سب سے بڑا فیصلہ تھا کیوں کہ وہ ہمیشہ نون-وائلینس کی بات کرتے تھے۔ حالانکہ انہوں نے اس وقت بھی کہا کہ یہ نون-وائلینس طریقے سے ہونا چاہئے، انہوں نے وہ راستہ نہیں چھوڑا، لیکن انہوں نے کل کی آدھی رات "Quit India" کا نعرہ دیا۔

مہودے، میں کل کی رات ہوئی گھٹناؤں کا الگ یکھہ نہیں کرنا چاہتا، لیکن کل بھی بالکل وہی رات لگ رہی تھی کیوں کہ ہم صبح تک جاگتے رہے۔ مہودے، آج موقع دوسرا ہے، میں اس میں راجنیتی کو نہیں لانا چاہتا ہوں، لیکن کل کی رات بھی وہی تھی اور دن بھی وہی تھا۔ اس وقت رات کو جب یہ ریزولیوشن پاس ہوا اور مہاتما گاندھی نے یہ clarion call دی، گاندھی جی سے لیکر تمام ورکنگ کمیٹی کے ممبرس، کانگریس پریزیڈینٹس، جواہر لال نہرو، اور سردار پٹیل تک سبھی کو اس رات گرفتار کیا گیا اور نو، اگست کی تاریخ کو کانگریس کو ban کر دیا گیا اور اخبارات کو ban کیا گیا۔ اس وقت 'نیشنل ہیرالڈ' اخبار تھا، جس میں پنڈت جواہر لال نہرو لکھتے تھے، 'ینگ انڈیا' اور 'ہریجن' کے لئے مہاتما گاندھی لکھتے تھے، ان

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

سبھی کو ban کیا گیا۔ اب یہ دوسری بات ہے کہ آج انہیں اخباروں کی جگہ کے لئے ہمیں لڑائی لڑنی پڑ رہی ہے، جو کہ بھارت کی آزادی کی mouthpiece تھے۔

مہودے، خاص بات یہ تھی کہ سبھی نیتاؤں کی گرفتاری کے بعد بھارت کی جنتا نے چارج سنبھالا، اروانا آصف علی نے جھنڈا پھیرایا۔ مہودے، اس وقت چارج اس وقت کے کسانوں، مزدوروں، نوجوانوں اور یونیورسٹی و کالجز کے اسٹوڈینٹس نے سنبھالا۔ میں کانگریس سوشلسٹ پارٹی کو بھی بدھائی دینا چاہتا ہوں کیوں کہ جب انہوں نے دیکھا کہ کانگریس کے سبھی نیتا جیل میں ہیں اور اس وقت دیش کو ان کی بہت ضرورت ہے، انہوں نے اس وقت پورا یوگدان دیا۔ حالانکہ ان کے کانگریس قیادت کے ساتھ بڑے مدبھید رہتے تھے، لیکن "Quit India Movement" کے call پر انہوں نے سوچا کہ اس وقت ہمیں دیش کے ساتھ وفائی کرنا ہے اور انہوں نے اس وقت کانگریس کے ورکرس کو دشا دینے میں یوگدان دیا۔ مہودے، لاکھوں لوگ جیل گئے، ہزاروں لوگ مارے گئے اور دیش نے ایک بہت بڑی قربانی دی۔ میں آج اس وشئے میں بھی نہیں جانا نہیں چاہتا کہ اس وقت کون پارٹیز اس سے باہر رہیں اور کن پارٹیز نے ورودھ کیا۔ وہ ایک اتہاس ہے اور آج وکی پیڈیا، گوگل پر آپ کو ساری جانکاری مل جائے گی کہ کون اس اتہاس کا حصہ تھا یا نہیں تھا۔

श्री सीताराम येचुरी (पश्चिमी बंगाल): महोदय, आज 9 अगस्त को Internet के archives पर पाबंदी लग जाएगी और आप जो इतिहास बता रहे हैं, वह आज की पीढ़ी को पढ़ने को नहीं मिल पाएगा। अगर ऐसी बात है, तो मैं आप से आग्रह कर रहा हूं कि आप इसे सुधार लीजिए ताकि यह न हो कि हमारे देश की आज की पीढ़ी को यह information न मिले।

श्री गुलाम नबी आज़ाद: महोदय, आपके पास गांधी जी जैसा आदर्श है और जिनके पास गांधी जी जैसे इस देश के इतने बड़े महान लीडर हों, जिन्होंने "Do or Die" का नारा दिया, मुझे नहीं लगता कि हमें इन छोटी-छोटी बातों से डरना चाहिए। आज हम जिन लीडर्स को श्रद्धांजली अर्पित कर रहे हैं, उन्होंने दुनिया की सब से mightiest ताकत को भारत से निकाल दिया था। यदि इन्टरनेट बंद होता है या दूसरी चीजें बंद होती हैं, तो ये हिन्दुस्तान के उस revolution के सामने ये बहुत छोटी चीजें हैं। सिर्फ यह होना चाहिए कि आप उन्हीं उसूलों के साथ रहें, उन्हीं आदर्श के साथ रहें और उसी जज्बे के साथ रहें, जो जज्बा महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना आजाद, सुभाषचंद्र बोस और उनके साथियों में था। जो कुर्बानी का जज्बा था, देश के लिए कुर्बानी, बच्चों के लिए कुर्बानी, बीवी तथा रिश्तेदारों के लिए कुर्बानी, अपने साथियों और सहयोगियों के लिए कुर्बानी, अगर हमें उस कुर्बानी पर विश्वास है, भरोसा है, तो इन तमाम चीजों का मुकाबला किया जा सकता है।

मैं माननीय लीडर ऑफ दि हाउस के साथ इस बात में बराबर शामिल हूं, क्योंकि एक सबसे बड़ी बात "क्विट इंडिया मूवमेंट" की हुई थी कि उस समय कोई कम्युनल दंगा नहीं हुआ, क्योंकि महात्मा गांधी और पंडित जवाहर लाल नेहरू दोनों ने 8 अगस्त को अपने भाषणों में कहा था कि हिन्दू और मुसलमान मिलकर रहेंगे, तो हम यह आजादी हासिल करके रहेंगे। मैं उस वक्त के करोड़ों हिन्दुओं और मुसलमानों को बधाई देता हूं कि इस पूरे संघर्ष में उनको तीन साल के बाद छोड़ा गया और 1945 तक यह लड़ाई लड़ी गई। उस लड़ाई में हजारों लोग मारे गए और लाखों लोग जेल में गए, लेकिन कहीं कोई हिन्दू-मुसलमान दंगा नहीं हुआ। यही हमारी ताकत थी और उस लीडरशिप की भी ताकत थी। आज मैं यही कामना करता हूं कि जो 1857 की जंगे-आजादी थी या विशेष रूप से 1942 से लेकर 1946-47 तक की जंगे-आजादी थी, अगर आप उन शहीदों को, उन लीडरों को, उन लाखों किसानों, मजदूरों, नौजवानों, लेखकों, पत्रकारों, बुद्धिजीवियों को सच्चे मन से श्रद्धांजिल अर्पित करना चाहते हैं, तो सबसे पहले हमें अपने मन साफ करने होंगे, अपने दिल साफ करने होंगे। जो हमारी बाहर की सफाई है या जो हम कपड़े पहनते हैं, ये तो केवल दुनिया को दिखाने के लिए हैं, लेकिन अगर हमारे देश को कोई एक चीज साफ रख सकती है, तो वह हमारे मन की, दिल और दिमाग की सफाई ही रख सकती है। हमारी गलियां और नालियां स्वच्छ करने से भारत स्वच्छ नहीं होगा, हमें इसके लिए अपना मन, दिल तथा दिमाग स्वच्छ करना होगा। यदि वह स्वच्छ हो गया, तो यह इकनॉमिक, आर्थिक, कल्चरल रेवोल्यूशन आदि चलते ही रहेंगे। दुनिया में कई बादशाह, कई राजा, कई महाराजा आए हैं, उनमें से किसी ने भी गरीबी खत्म नहीं की, लेकिन इस देश को यदि किसी से खतरा है— आज ब्रिटेन नहीं है, आज बाहर दुश्मन नहीं है, आज हमें खतरा अपने आप से ही है, अपनी सोच से है और अपने दिल और दिमाग से है। हमें उस सोच को खत्म करना है, जो इंसानियनत की दुश्मन है। मैं आज सभी देशवासियों से यही कामना करता हूं कि यदि हम अपनी सोच बदल देंगे, तो महात्मा गांधी जी ने स्वतंत्र भारत का जो सपना देखा था, शायद वह साकार हो जाएगा। इन्हीं शब्दों के साथ

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]
मैं उन तमाम नेताओं को श्रद्धांजिल अर्पित करता हूं और जो भी यहां resolution रखा जाएगा, उसका समर्थन करता हूं, जय हिन्द।

†**जناب غلام نبی آزاد:** مہودے، آپ کے پاس گاندھی جی جیسا آدرش ہے اور جن کے پاس گاندھی جی جیسے اس دیش کے اتنے بڑے مہان لیڈر ہوں، جنہوں نے "Do or Die" کا نعرہ دیا، مجھے نہیں لگتا کہ ہمیں ان چھوٹی چھوٹی باتوں سے ڈرنا چاہئے۔ آج ہم جن لیڈرس کو شردّھانجلی ارپت کر رہے ہیں، انہوں نے دنیا کی سب سے mightiest طاقت کو بھارت سے نکال دیا تھا۔

اگر انٹرنیٹ بند ہوتا ہے یا دوسری چیزیں بند ہوتی ہیں، تو یہ ہندوستان کے اس revolution کے سامنے یہ بہت چھوٹی چیزیں ہیں۔ صرف یہ ہونا چاہئے کہ آپ انہیں اصولوں کے ساتھہ رہیں، انہیں آدرشوں کے ساتھہ رہیں اور اسی جذبے کے ساتھہ رہیں، جو جذبہ مہاتما گاندھی، پنڈت جواہر لال نہرو، سردار پٹیل، مولانا آزاد، سبھاش چندر بوس اور ان کے ساتھیوں میں تھا۔ جو قربانی کا جذبہ تھا، دیش کے لئے قربانی، بچوں کے لئے قربانی، اگر ہمیں اس قربانی پر وشواس ہے، بھروسہ ہے، تو ان تمام چیزوں کا مقابلہ کیا جا سکتا ہے۔

میں مان نّے لیڈر آف دی ہاؤس کے ساتھہ اس بات میں برابر شامل ہوں، کیوں کہ ایک سب سے بڑی بات "Quit India Movement" کی ہوئی تھی کہ اس وقت کوئی کمیونل دنگا نہیں ہوا، کیوں کہ مہاتما گاندھی اور پنڈت جواہر لال نہرو دونوں نے، آٹھہ اگست کو اپنے بھاشنوں میں کہا تھا کہ ہندو اور مسلمان مل کر رہیں گے تو ہم یہ آزادی حاصل کرکے رہیں گے۔ میں اس وقت کے کروڑوں ہندوؤں اور مسلمانوں کو بدھائی دیتا ہوں کہ اس پورے سنگھرش میں ان کو تین سال کے بعد چھوڑا گیا اور 1945 تک یہ لڑائی لڑی گئی۔ اس لڑائی میں ہزاروں لوگ مارے گئے اور لاکھوں لوگ جیل میں گئے، لیکن کہیں کوئی ہندو مسلمان دنگا نہیں ہوا۔ یہی ہماری طاقت تھی اور اس لیڈرشپ کی بھی طاقت تھی۔ آج میں یہی کامنا کرتا ہوں کہ جو 1857 کی جنگ آزادی تھا یا خاص طور سے 1942 سے لیکر 47-1946 تک کی

† Transliteration in Urdu script.

،جنگ آزادی تھی، اگر آپ ان شہیدوں کو، ان لیڈروں کو، ان لاکھوں کسانوں مزدوروں، نوجوانوں، لیکھوں، پترکاروں، بدّھی-جیووں کو سچے من سے شردّھانجلی ارپت کرنا چاہتے ہیں، تو سب پہلے ہمیں اپنے من صاف کرنے ہوں گے اپنے دل صاف کرنے ہوں گے۔ جو ہماری باہر کی صفائی ہے یا جو ہم کپڑے پہنتے ہیں، یہ تو صرف دنیا کو دکھانے کے لئے ہیں، لیکن اگر ہمارے دیش کو کوئی ایک چیز صاف رکھہ سکتی ہے، تو وہ ہمارے من کی، دل کی اور دماغ کی صفائی ہی رکھہ سکتی ہے۔ ہماری گلیاں اور نالیاں صاف کرنے سے بھارت صاف نہیں ہوگا ہمیں اس کے لئے اپنے من، دل و دماغ صاف کرنا ہوگا۔ اگر وہ صاف ہو گیا، تو یہ اکانومک، آرتھک، کلچرل، ریولیشن وغیرہ چلتے ہی رہیں گے۔ دنیا میں کئی بادشاہ کئی راجہ، کئی مہاراجہ آئے ہیں، ان میں سے کسی نے بھی غریبی ختم نہیں کی لیکن اس دیش کو اگر کسی سے خطرہ ہے آج برٹین نہیں ہے، آج باہری دشمن نہیں ہے، آج ہمیں خطرہ اپنے آپ سے ہی ہے، اپنی سوچ سے ہے اور اپنے دل و دماغ سے ہے۔ ہمیں اس سوچ کو ختم کرنا ہے، جو انسانیت کے دشمن ہیں۔ میں آج سبھی دیش-واسیوں سے یہی کامنا کرتا ہوں کہ اگر ہم اپنی سوچ بدل دیں گے، تو مہاتما گاندھی جی نے آزاد بھارت کا جو سپنا دیکھا تھا، شاید وہ ساکار ہو جائے گا۔ انہیں شبدوں کے ساتھہ میں ان تمام نیتاؤں کو شردّنجلی ارپت کرتا ہوں اور جو بھی یہاں ریزولیوشن رکھا جائے گا، اس کا سمرتھن کرتا ہوں، جے ہند۔

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Hon. Members, we are to conclude by 1.00 p.m. Therefore, I expect Members to show self-restraint. Try to finish your speech within five minutes. That is my only request. Now, Prof. Ram Gopal Yadav.

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश): श्रीमन्, चेयर से जो कहा गया और नेता सदन तथा नेता प्रतिपक्ष ने यहां जो कहा, उससे अपने आपको संबद्ध करते हुए आज के इस ऐतिहासिक दिन पर मैं कुछ ऐसी बातें भी कहना चाहूँगा, जो इतिहास से जुड़ी हुई हैं, लेकिन फिर भी उनको नज़रअंदाज किया जाता है।

महोदय, 8/9 अगस्त की रात को, जब गांधी जी ने "भारत छोड़ो आंदोलन" या Quit India Movement का नारा दिया, "करो या मरो" का नारा दिया, तो वहां कुछ बहुत महत्वपूर्ण नेता ऐसे भी थे, जो जानते थे कि कुछ घंटे के अंदर ही यह सारा नेतृत्व गिरफ्तार हो जाएगा, फिर आंदोलन को कौन चलाएगा? गांधी जी, नेहरू जी, राजगोपालाचारी जी, पटेल जी, मौलाना आज़ाद जी एक घंटे के अंदर गिरफ्तार हो गए। आंदोलन को चलाने के लिए उस वक्त वहां

[प्रो. राम गोपाल यादव]

जयप्रकाश जी भी थे और डा. लोहिया भी थे। वे सब यह सोचकर अंडरग्राउंड हो गए कि कल जब गांधी जी और हमारे बड़े नेताओं की गिरफ्तारी पर पूरा देश उठ खड़ा होगा, तो उसको दिशा देने का काम कौन करेगा? सन् 1942 की क्रांति पर अगर लोहिया और जयप्रकाश का नाम न लिया जाए, तो कोई मतलब नहीं है। सन् 1942 की असली लड़ाई इन्हीं लोगों ने लड़ी, चाहे उसमें लोहिया ने रेडियो के जरिए संदेश देने का काम किया हो या बुलेटिंस निकालने का काम किया हो। जयप्रकाश जी गिरफ्तार हो गए। बाद में पता चला कि वे हजारीबाग जेल को तोड़कर नेपाल चले गए। डा. राममनोहर लोहिया ने काफी दिनों तक अंदर रहकर काम किया और उसके बाद उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया। उसके बाद, उनको लाहौर फोर्ट में ले जाया गया, जहां उन्हें जो यातनाएँ दी गईं, वे अकल्पनीय थीं। उन्होंने हैरोल्ड लॉस्की को चिट्ठी लिखी। गांधी जी को जब यह मालूम पड़ा कि लोहिया और जयप्रकाश, दोनों बन्द हैं, तो गांधी जी के intervention पर सन् 1945 में डा. राममनोहर लोहिया को छोड़ा गया। हालांकि अंग्रेज़ यह समझ गए थे कि अब उनको भारत छोड़ना पड़ेगा, क्योंकि Second World War चल रहा था, ब्रिटेन कमजोर हो रहा था और हिन्दुस्तान की जनता गांधी जी के इस "करो या मरो" के नारे के साथ पूरी तरह से उठ खड़ी हुई थी, फिर भी कई वर्ष लगे और 15 अगस्त, 1947 को देश आज़ाद हुआ। देश आज़ाद तो हुआ, लेकिन बँटवारे के साथ आज़ाद हुआ। अंग्रेज़ हिन्दुस्तान को एक ऐसा घाव दे गए, जो कभी भर नहीं सकता है, जो नासूर की तरह हमेशा हम लोगों को कष्ट देता रहता है। लेकिन, आज़ादी के बाद भी ऐसी बहुत सारी घटनाएँ घटीं, जिनसे हमको सबक लेना चाहिए था और उस इतिहास को हमें वर्तमान से लेकर आगे आने वाली पीढ़ी को भी याद रखने के लिए कायम रखना चाहिए। इतिहास को बदलने की, इतिहास को भुलाने की, नई पीढ़ी उसको जान न सके, इस तरह की अगर बात होगी, तो हमारा जो शानदार अतीत रहा है, उसका आने वाली पीढ़ी के लिए फिर कोई मतलब नहीं रह जाएगा।

जब चीन ने तिब्बत पर कब्जा किया था, तो सारे लोग जानते हैं कि तब डा. राममनोहर लोहिया ने कहा था कि यह शिशु-हत्या है, पंडित जी, इसको स्वीकार मत कीजिए। अगर तिब्बत बना रहेगा, तो वह चीन और हिन्दुस्तान के बीच में बफर स्टेट रहेगा और हम सुरक्षित रहेंगे। लेकिन तिब्बत चला गया। तिब्बत के साथ-साथ हमारा कैलाश-मानसरोवर चला गया। क्या हमें कष्ट नहीं होता है, जब हम कैलाश-मानसरोवर की यात्रा के लिए जाते हैं और हमें चीन से वीज़ा लेना पड़ता है? यह हर हिन्दुस्तानी की आत्मा को कचोटता है कि अपने ही कैलाश-मानसरोवर की यात्रा पर जाने के लिए हमें चीन से वीज़ा लेना पड़ता है। गलतियां हुईं, उन गलतियों से हमें सीखना पड़ेगा। इसके बाद वही हुआ, जो आशंका थी। जब देश पर चीन ने 1962 में आक्रमण किया था और जिस तरह की हमारी स्थिति बनी थी, उस वक्त दिनकर जी इस सदन के मेम्बर थे, उन्होंने दुखी होकर, चूंकि हिमालय साक्षी है, एक कविता लिखी थी, उसकी दो लाइनें मैं पढ़ना चाहता हूँ। मैं दिनकर जी की कविता से क्वोट करना चाहता हूँ, जो उन्होंने इसी सदन में हिमालय को संबोधित करते हुए कही थी—

"रे, रोक युधिष्ठिर को न यहां, जाने दे उनको स्वर्ग धीर।

पर, फिर हमें गाण्डीव-गदा, लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।"

ऐसे लोगों की जरूरत है और हमेशा रहेगी। हमें दब कर किसी से बात नहीं करनी पड़ेगी। सबसे महत्वपूर्ण तो हमारा हिमालय रहा है। हम लोगों ने "हिमालय बचाओ" आंदोलन किया, जेल गए। इसके लिए आंदोलन किया और न जाने हमारा हिमालय तो हमारे लिए कब से इम्पोर्टेंट है? आप में से कई संस्कृत के विद्वान यहां बैठे होंगे। महाकवि कालिदास ने "कुमारसम्भव" की शुरूआत हिमालय से ही की थी- "अस्त्युत्तरास्याम् दिशि देवतात्मोनाम् हिमालयोनाम नगाधिराजः।" यहीं से शुरू किया, जो "कुमारसम्भव" का पहला श्लोक है।

जयशंकर प्रसाद जी ने जो "कामायनी" लिखी है, उसकी पहली लाइन में ही है किः—

हिमिगर के उतुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छांह
एक पुरुष बैठे भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह।

यह वहीं से शुरू की है। ये सारी बातें उस हिमालय को लेकर कही हैं, जिसका कुछ हिस्सा हमारे पास है, लेकिन एक बड़ा हिस्सा तो चीन के पास चला ही गया, जो चीन ने ले लिया। हम लोगों को इससे सीखना पड़ेगा। अपने देश के इतिहास को हमारी आने वाली पीढ़ी समझती रहे कि कितने लोगों ने-जिन्हें हम जानते हैं उन्हें तो श्रद्धांजलि देते हैं, जिन्हें नहीं जानते उनको भी श्रद्धांजलि देते हैं, न जाने कितने अनजान लोगों ने इस देश के लिए अपनी जान गंवाई। नेता सुभाषचंद्र बोस जी कहां से कहां तक गए? उन्होंने यह सब इस देश के लिए किया। तो हिमालय की तरफ हमें अपनी नजर रखनी पड़ेगी। माननीय रक्षा मंत्री जी, नेता सदन यहां बैठे हुए हैं, हिमालय की तरफ इसलिए नजर रखनी पड़ेगी, क्योंकि असली खतरा उधर से ही है। हिमालय, जो हमारे लिए दीवार का काम करता था, हमारे रक्षक का काम करता था, तिब्बत के चले जाने के बाद हमारे लिए असुरक्षा की स्थिति पैदा हो गई है। उसकी तरफ ध्यान देना पड़ेगा।

महोदय, हमारा इतिहास बहुत शानदार है। साल 1942 का आंदोलन, यह बात कहना कि क्योंकि उस वक्त कांग्रेस पार्टी ही थी, सारा देश उससे जुड़ा हुआ था तो वह पूरे देश का आंदोलन था, ...(**समय की घंटी**)... हमारे नेता प्रतिपक्ष बोल रहे थे, तो ऐसा लगता था कि वह केवल कांग्रेस पार्टी का आंदोलन था। ऐसा नहीं था, वह सब का आंदोलन था, सारे लोगों का आंदोलन था। कांग्रेस शोषित लोहिया जी, जय प्रकाश जी, ईएमएस नम्बूदरीपाद जी, गोपालन साहब जैसे सभी लोग शुरू में कांग्रेस पार्टी में थे। सभी इम्पोर्टेंट थे, कांग्रेस वर्किंग कमेटी के मेम्बर थे, फैसला लेने वाले लोग थे। अगर इन सभी लोगों का नाम नहीं लोगे, इतिहास को भुलाना चाहोगे, तो हमारी आने वाली पीढ़ी किन को अपना आदर्श मानेगी? किसको आगे लेकर चलें? आप इशारा कर रहे हैं तो मैं यह कहते हुए अपनी बात खत्म करना चाहता हूं कि आज के दिन हम उन सभी को श्रद्धांजलि देते हैं, जिन्होंने इस देश की आज़ादी के लिए कुरबानी दी, जिन्होंने इस देश की आज़ादी के लिए संघर्ष किया और अपनी कुरबानी के रूप में, अपने संघर्ष के रूप में आने वाली पीढ़ी को एक ऐसी विरासत दे गए कि अगर हम उस पर चलेंगे, उसको याद रखेंगे, तो इस देश को आगे बढ़ाने का काम करेंगे।

उपसभापति जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Hon. Members, I know this is a subject on which everybody would like to speak at length, but once again, I request you to kindly restrict your speech within the time given.

SHRI SUKHENDU SEKHAR ROY (West Bengal): You can extend the time.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no; it is up to 1.00 p.m. Beyond that, we cannot extend. Now, Shri Navaneethakrishnan.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, this is a discussion on 'Quit India Movement'. You don't give a ruling saying, 'quit discussion.'

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will never say that. I only said, 'self-restraint'.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, allow everybody to speak. After all, it is connected with...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I requested for 'self-restraint.' That was also the message of 'Quit India'. I think, the consensus is to conclude it by 1.00 p.m. Isn't it? Shri A. Navaneethakrishnan.

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN (Tamil Nadu): Thank you, hon. Deputy Chairman. On this solemn occasion, I would like to recall the vision statement of Gandhiji, which he had made at the time of launch of Quit India Movement in August, 1942. That statement was also referred to by the Leader of the Opposition, and I quote, "In the democracy which I have envisaged, a democracy established by non-violence, there will be equal freedom for all. Everybody will be his own master. It is to join the struggle for such a democracy that I invite today." That is a statement which was referred to by our Leader of the Opposition. So, Quit India Movement was a great success. The call given by Gandhi was a great success. Everybody in India participated, the leaders and even the ordinary men participated. There was participation, especially in Tamil Nadu. It was led by leaders like Rajaji, Kamaraj and Sathyamurthy, and the English newspaper, The Hindu, played a vital role. So, we are very happy to participate in this celebration. On the eve of the 75th year of Quit India Movement, we dedicate ourselves to rebuild this great secular, democratic, sovereign, socialist country, that is, India. Thank you, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now Shri Sukhendu Sekhar Roy. He is not here. Now Shri Sharad Yadav.

श्री शरद यादव (बिहार): उपसभापति जी, नेता सदन, नेता विरोधी दल, प्रो. राम गोपाल यादव और श्री ए. नवनीतकृष्णन जी के बाद मैं भी बहुत संक्षेप में अपनी बात रखूंगा। वैसे इसमें वक्त की पाबंदी नहीं होनी चाहिए। आज इस पर लंबा बोलने का हमारा बहुत मन था, लेकिन

12.00 Noon

आपने वक्त तय किया है, समय सीमा तय की है, इसलिए मैं इस समय सीमा के भीतर अपनी बात खत्म करने की कोशिश करूंगा।

श्रीमान, इतिहास ही आने वाले वक्त की राह और रास्ता तय करता है। जो इतिहास से सबक नहीं लेते हैं, वे हमेशा गड्ढे में जाते हैं।

जो अगस्त क्रांति है, वह हिन्दुस्तान की आजादी की आर-पार की लड़ाई है। मैं इतना निवेदन करना चाहूंगा कि अगस्त क्रांति में पूरा देश महात्मा जी की अगुवाई में था। उसके बाद जवाहर लाल जी थे, सरदार वल्लभभाई पटेल थे, मौलाना आजाद थे, नामों की बहुत लम्बी फेहरिस्त है। पूरे देश की जो आगे आने वाली लीडरशिप थी, वह एक-दो घंटे में जेल चली गई थी। इसके बाद 1942 का जो आंदोलन है, इस देश के नौजवानों ने उसे अपने हाथों में लिया। राम गोपाल जी ने ठीक कहा, लड़ाई कांग्रेस की अगुवाई में हुई और मैं मानता हूं कि वे सारे नेता अगुवाई करने वाले थे, लेकिन कांग्रेस पार्टी के भीतर ही कांग्रेस सोशिलस्ट पार्टी थी और इसमें सब लोग नौजवान थे। जयप्रकाश जी जेल फांद जाते हैं, डा. लोहिया, अरुणा आसफ अली, यूसुफ़ मेहर अली कितने लोगों के नाम हैं। मैं जिस गांव बाबई में रहता हूं, जहां मेरा जन्म हुआ है, वहां भारतीय आत्मा माखन लाल चतुर्वेदी सहित 52 लोग गिरफ्तार हुए थे। मुझे गौरव है कि उस समय मेरे पिताजी भी गिरफ्तार हुए थे। 1857 का आपने जिक्र किया, सुभद्रा कुमारी चौहान, जिन्होंने "खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी" की रचना की थी — झांसी की इस लड़ाई में मेरे परदादा — grand father भुजबल सिंह मारे गए। 1942 में एक नहीं, जो आगे आने वाला नेतृत्व था, वह सब जेल में था। लेकिन हिन्दुस्तान के नौजवानों ने "भारत छोड़ो आंदोलन" का नेतृत्व किया। यह आंदोलन कोई एक दिन में नहीं बना है — झांसी की रानी से लेकर, मंगल पांडे से लेकर, बहादुर शाह ज़फर से लेकर, भगत सिंह से लेकर, सुखदेव सिंह से लेकर कितने लोग इसमें अपनी जान कुर्बान कर गए, कितने लोग फांसी चढ़ गए। आजाद हिन्द फौज के भी कितने लोग हलाक हो गए, वतन से चले गए। यह लड़ाई साझा है और इतिहास को साझा बनाकर रखना है। हमारा देश कई तरह की साझा विरासत से बना है। अगर हम उस साझा विरासत को, उस इतिहास को याद नहीं रखेंगे तो मैं मानता हूं कि आने वाली जो नस्लें हैं, हमारे आने वाले जो लोग हैं वे कई तरह के भ्रम में पड़ेंगे। इतिहास की सच्चाई आने वाली राह की सच्चाई होती है, इतिहास की गवाही बुनियाद होती है और उस बुनियाद की एक ईंट को भी अगर आप इधर से उधर गाढ़ देंगे, लगा देंगे तो फिर आगे जो इमारत खड़ी होगी, वह भर-भराकर गिर जाएगी। इतिहास के साथ आजकल बहुत छेड़खानी होती है। इस मौके पर मैं बोलना नहीं चाहता, लेकिन मैं एक बात जरूर कहना चाहता हूं कि जो मुल्क और जो कौम अपने पुरुखों के इतिहास से छेड़खानी करती है, उस कौम के साथ ही छेड़खानी हो जाती है। अकेले उनके साथ छेड़खानी नहीं होती है, हम जो जिंदा लोग हैं, उनके साथ भी छेड़खानी हो जाती है। विचारों में भिन्नता होती है, पर विचारों में भिन्नता नहीं हो, तो फिर लोकतंत्र किसको कहते हैं? महात्मा जी ने कहा है कि लोकतंत्र गोली से नहीं, बोली से चलेगा। हमारे देश का जो आईन है, वह बोली का है, वह साझी विरासत का है। वह इतिहास की थाती है। बाबा साहेब अम्बेडकर और उस समय संविधान सभा में जो लोग थे, वे इस देश की धरती से, मिट्टी से इस तरह से गहराई से जुड़े हुए थे। वे इतनी गहराई से जुड़े हुए थे कि वे इस देश के अंतर्विरोधों को जानते थे। वे भाषा, region और religion के अंतर्विरोधों को जानते थे। हर 20 किलोमीटर पर भाषा बदल जाती है। ये सारी चीजें

[श्री शरद यादव]

जानने के बाद उन्होंने संविधान बनाया। गीता, रामायण, आगम और निगम के परे यह लोगों के लिए है। ये जो दीन की किताबें हैं, आप वहां ऊपर जाएँगे, जन्नत जाएँगे, स्वर्ग जाएँगे, उसके लिए हैं। पैदा होने के पहले आप क्या थे,...

श्री उपसभापतिः ठीक है, आप समाप्त कीजिए।

श्री शरद यादवः सर, मैं दो मिनट में अपनी बात खत्म करता हूँ। यह जो संविधान की किताब है, यह जिंदा लोगों की जिन्दगी सँवारने और बनाने के लिए है, आने वाले पूरे भारत के भविष्य को बनाने के लिए है। मैं इसके बारे में कहना चाहता हूँ कि अगर जिंदा लोगों की सबसे ज्यादा इबादत की कोई किताब है, तो वह संविधान है। इसलिए इस संविधान को बचा कर रखना है, इस साझी विरासत को बचा कर रखना है। 1942 के आन्दोलन का यही एक मकसद था, यही एक राह थी। वह सबका साझा बड़ा आन्दोलन था। ...(**समय की घंटी**)... माफ करना, मैं अपनी बात को यहीं समाप्त करता हूँ। बहुत-बहुत शुक्रिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सुखेन्दु शेखर रायः सर, बॉम्बे के ग्वालिया टैंक मैदान में जब कांग्रेस का ऐतिहासिक अधिवेशन हुआ, तो उसमें नेहरू जी ने resolution move करते हुए कहा, I quote, "We shall fight to the finish." गांधी जी ने उसके valedictory address में कहा, I quote, "Here is a mantra, a short one that I give you. You may imprint it on your hearts and let every breath of yours give expression to it. The mantra is 'Do or Die'. करेंगे या मरेंगे। British, quit India. अंग्रेजों भारत छोड़ो।" कांग्रेस को ban किया गया, सारे नेता और एक लाख से अधिक कांग्रेस वर्कर्स को सारे हिन्दुस्तान में पकड़ा गया, लेकिन जैसा राम गोपाल जी ने बताया, जयप्रकाश नारायण जी, अच्युत पटवर्धन जी, हमारे राम मनोहर लोहिया जी, बीजू पटनायक जी, सुचेता कृपलानी जी, ऐसे बहुत सारे नेता underground हो गए। Leaflet से instruction दिया जाता था। यहां तक कि underground यानी खुफिया radio station से भी ऊषा मेहता जी के नेतृत्व में instruction दिया जाता था, जो बॉम्बे से शुरू किया गया। इस तरह सारे हिन्दुस्तान में आन्दोलन फैल गया। मैं एक पुराने leaflet से दो लाइनें पढ़ना चाहता हूँ, जो बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी ने उस समय, 20 सितंबर, 1942 को issue किया था। वे इस leaflet में कह रहे हैं, I quote, "हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई छिड़ गई है। आज हम अपने को आजाद समझते हैं और ब्रिटिश सरकार की सत्ता को नहीं मानते हैं। इसलिए ब्रिटिश सरकार के किसी कानून और हुक्म को नहीं मानना चाहिए।" उस हुकूमत के खिलाफ क्या करना चाहिए, उन्होंने 30 bullet points में बता दिया, जिनमें से मैं दो-तीन points को quote करके बताना चाहता हूँ। "शिक्षक और विद्यार्थी स्कूल-कॉलेज छोड़ दो। वकील, मुख्तार कचहरी जाना छोड़ दो। पुलिस, पलटन वाले और सरकारी नौकर सरकारी नौकरी छोड़ दें। रेलवे लाइन उखाड़ दिए जाएँ। बड़े-बड़े पुल तोड़ दिए जाएँ। तार और टेलीफोन के तार काट दिए जाएँ और सड़क काट दिए जाएँ।" इस तरह सारा हिन्दुस्तान अगस्त क्रांति के आन्दोलन में उतर गया। सर, इसके बाद हम जानते हैं कि महाराष्ट्र के सतारा में नाना पाटिल और वाई.बी. चव्हाण के नेतृत्व में, उत्तर प्रदेश के बलिया में चित्तू पाण्डे के नेतृत्व में और बंगाल के तामलुक में, सतीश सामंत और अजय मुखर्जी के नेतृत्व में National Government form की गई। यह सबसे ज्यादा, तीन साल से अधिक समय तक सतारा में चली, तीन साल तक बंगाल में चली और कुछ महीने बलिया में चली। बलिया में चित्तू पाण्डे एवं जितने भी कांग्रेस कर्मियों को पकड़ा गया था, सबको रिहा कर

दिया गया और सारे थानों पर अलग-अलग कब्ज़ा कर लिया गया था। यह एक महान इतिहास है। केवल पांच मिनट में इसको खत्म नहीं करना चाहिए। यह एक यादगार है और यह यादगार तब तक बनी रहेगी, जब तक हिन्दुस्तान के लाल किले पर तिरंगा फहरेगा।

सर, मैं बोलना चाहता हूं कि उसी समय, जब यह आंदोलन धीरे-धीरे खत्म होने वाला था, सीमा के उस पार से नेता जी सुभाष चंद्र बोस ने ललकार दी, 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा' और आज़ाद हिन्द सेना के उन महान क्रांतिकारी लोगों ने दिल्ली के लिए कूच कर दिया और नारा लगाया, 'चलो दिल्ली', 'कदम-कदम बढ़ाए जा', 'तू शेर-ए-हिंद आगे बढ़, मरण से फिर भी तू न डर, आसमां तक उठा के सिर, जोश-ए-वतन बढ़ाए जा'। इस तरह हिन्दुस्तान की आज़ादी का momentum create हुआ, उसके बाद Naval Mutiny हुआ और उसके बाद Red Fort में INA Trial हुआ। ये सब culminate हुए और इनके बदले में हमको आज़ादी मिली। इसमें सारे हिन्दुस्तान की जनता का एक ऐतिहासिक योगदान था। उसमें 10,000 से अधिक लोगों को गोली से उड़ा दिया गया था, लाखों लोगों को जेल भेज दिया गया था और इस तरह हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ।

हमें खेद है, उस समय भी कुछ विश्वासघाती लोग थे, मीर ज़ाफर जैसे लोग थे, जिन्होंने उस आंदोलन में योगदान नहीं दिया। उस समय भी कुछ पार्टियां थीं, जिन्होंने 120 पन्ने की रिपोर्ट, उस जमाने के Home Secretary, Watson के पास भेजी कि मैं तुम्हारे निर्देश पर काम कर रहा हूं और इस अगस्त क्रांति आंदोलन को बरबाद करने के लिए हरेक कदम उठा रहा हूं। बंगाल में उस समय जो मंत्रिमंडल था, उस मंत्रिमंडल के Deputy Chief Minister, जो एक पार्टी के second-incommand थे, उन्होंने भी Governor को चिट्ठी लिखकर बताया कि अगस्त क्रांति आंदोलन का दमन करने के लिए हमने यह-यह कार्यवाही की है। आज भी हमारे देश में ऐसे विश्वासघाती लोग हैं, ऐसे मीर ज़ाफर हैं, इसलिए हमारा भाईचारा संकट में पड़ गया है, हमारी एकता संकट में पड़ गई है। इसीलिए हमारी नेत्री, ममता बनर्जी आज के इस ऐतिहासिक दिन उसी तामलुक में जाकर, मिदनापुर में जाकर आम सभा संबोधित करेंगी और नारा उठाएंगी, 'बीजेपी भारत छोड़ो'। जिस तरह अंग्रेज़ों ने 'Divide and Rule' की पॉलिटिक्स अपनाई थी, उसी तरह बीजेपी ने भी 'Divide and Rule' की politics अपनाई है। ...(**समय की घंटी**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, please. ...(*Interruptions*).. Don't bring in these things. ...(*Interruptions*)..

श्री सुखेन्दु शेखर रायः और हमारी जो बुनियादी नीति है, उस पर हमला किया है। ...(**समय की घंटी**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is okay. Your time is over. ...(*Interruptions*).. This is not the time for politics. ...(*Interruptions*)..

श्री सुखेन्दु शेखर रायः आज हमारे बंगाल में करोड़ों आदमी 'बीजेपी भारत छोड़ो' का नारा लगा कर, मैदाने जंग में उतरेंगे।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Sukhendu Sekhar Roy, that is okay. Don't bring in politics. Your time is over. ...(*Interruptions*)... Okay. ...(*Interruptions*)... Please sit down. ...(*Interruptions*)...

श्री सुखेन्दु शेखर रायः इसके साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं और उन शहीदों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। धन्यवाद।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now please sit down. ...(*Interruptions*).. I hope the Members will not bring politics into this discussion. ...(*Interruptions*).. Please sit down. ...(*Interruptions*).. This discussion has to be at a higher level. Don't bring politics into this.

SHRI JAIRAM RAMESH (Karnataka): Sir, this is not politics, this is the reality. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now Shri Sitaram Yechuriji. ...(*Interruptions*)... Please sit down.

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, this is very much a part of history, not politics. Okay. ...(*Interruptions*)..

विधि और न्याय मंत्री; तथा इलेक्ट्रानिकी और सूचना प्रोद्योगिकी मंत्री (श्री रवि शंकर प्रसाद)ः सर, आज का दिन एक ऐतिहासिक दिन है, हरेक को अपनी बात कहने का अधिकार है। मैं आपसे विनम्रता के साथ एक ही आग्रह करूंगा, अपनी बात जरूर कहें. इस तरह से आलोचना तो हम करते ही हैं, लेकिन आज कम से कम हम आलोचनाओं से ऊपर उठ सकते हैं।

श्री उपसभापतिः वही बात मैंने कही है। **...(व्यवधान)...**

श्री रवि शंकर प्रसादः महोदय, अगर ये इतिहास की बात करते हैं, तो हम बहुत इतिहास जानते हैं और आपका इतिहास भी हम जानते हैं। **...(व्यवधान)...**

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Today let us not take all these. ...(*Interruptions*)...

SHRI DIGVIJAYA SINGH (Madhya Pradesh): Can history be denied, Sir? ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Today, we have to rise above these kinds of differences. ...(*Interruptions*)... Shri Yechury. ...(*Interruptions*)... No, no, please. ...(*Interruptions*)... Shri Yechury. ...(*Interruptions*)... Shri Yechury. ...(*Interruptions*)... No, please. ...(*Interruptions*)...

SHRI ANAND SHARMA (Himachal Pradesh): Just a clarification. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, please. ...(*Interruptions*)...

SHRI ANAND SHARMA: Sir, just a clarification from the Chair. This is a very special occasion, solemn occasion; we agree.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is all what I am saying.

SHRI ANAND SHARMA: But whatever has been said, if it is a fact of history – fact of history and falsification of history are two things – the fact of history has to remain on record. That must remain on record. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The point is, this is not the time for controversy. ...(*Interruptions*)... See, Members are mature enough to know what to say and what not to say. Let us not use this occasion for a controversy or creating a division. That is all what I am saying. Shri Yechury. ...(*Interruptions*)... Yechuryji. ...(*Interruptions*)...

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, please correct my time.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. ...(*Interruptions*)...

श्री शिव प्रताप शुक्ल (उत्तर प्रदेश): सर, मैं सिर्फ एक बात कहना चाहता हूं **...(व्यवधान)...**

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, please. ...(*Interruptions*)... No, sit down, please. ...(*Interruptions*)... I am not allowing. ...(*Interruptions*)... Please sit down. ...(*Interruptions*)... I am not allowing. ...(*Interruptions*)... Please sit down. ...(*Interruptions*)... Only what Yechuryji is saying will go on record. ...(*Interruptions*).. Yechuryji, please start. ...(*Interruptions*)...

श्री शिव प्रताप शुक्लः *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I am not allowing. ...(*Interruptions*)...Please sit down. ...(*Interruptions*)... I am not allowing. Yechuryji, please start.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, start my time again.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, the 75th Anniversary of the 'Quit India Movement' is a very solemn occasion when we recollect not only the history but also the purpose and what was it that made it a successful Movement. If you go into history, Sir, there was a reference to Satara, the Independent State in Maharashtra. The leader of that Satara Independent Government was Nana Patil who was a member of the Communist Part of India and who came into this House and into the other House. So, do you want to go into that history and the role? ...(*Interruptions*)... Yes, Subhas Chandra Bose. But Rani Jhansi Regiment was led by Lakshmi Seghal who was a member of the CPI(M) and a candidate for the Presidency that we had put up. Let us - not try to appropriate this thing. If you go to the Cellular Jail today, eighty per cent of the names that are written there in marble are all of communists from Bengal or the undivided Punjab. There was Kalpana Dutta, the Chittagong Armoury Raid. …(*Interruptions*)…

---

* Not Recorded.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, the history is there for all of us. We had Shankar Dayal Sharmaji, our hon. President of India. On the 50th Anniversary of the Quit India Movement, there was a Midnight Session. Those days, we used to have Sessions to commemorate our history and learn from it, not to launch some project or the other like the GST that happened. Now, on that occasion, what did he say? What did he say, Sir? I am quoting from the speech he made in the Midnight Session. I quote, "After large-scale strikes in mills in Kanpur, Jamshedpur and Ahmedabad, a despatch from Delhi dated September 5, 1942 to the Secretary of State in London reported about the Communist Party of India: 'the behaviour of many of its members proves what has always been clear, namely, it is composed of anti-British revolutionaries'." Need anything more be said! So, what I am saying is that this is a Movement which had its one singular point. Of course, the leadership was with the Indian National Congress. We were all there. 'We' mean the 'communists'. I was not born. But the communists were all there in the AICC. The first time a complete Independent slogan, a Resolution that was moved was in the Ahmedabad Session of the AICC in 1921. And it was moved by whom? It was moved on behalf of the Communist Party of India. And, today you may be wondering. Who were those two people who moved it? They were Maulana Hasrat Mohani and Swami Kumara Nanda. A Maulana and a Swami move a Resolution on behalf of the Communist Party of India asking for complete Independence! Mahatma Gandhi did not accept it then. But finally in the Karachi AICC Session of 1929, Purna Swaraj Slogan was given. …(*Interruptions*)…

SOME HON. MEMEBRS: Lahore.

SHRI SITARAM YECHURY: Lahore. I am sorry. Correct. …(*Interruptions*)…

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Okay.

SHRI SITARAM YECHURY: The Purna Swaraj Declaration came in 1929. So, Sir, this is history. अगर 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के बारे में बात हो रही है, तो उसकी एक खासियत, जिसको हमें ध्यान में रखना है, वह है अपनी साझी विरासत। यह साझी विरासत देश के लोगों की है — हिन्दू, मुसलमान, दलित, ब्राह्मण, राजपूत, जो भी हैं, ये सब इकट्ठा हुए हैं। माननीय एलओपी जिक्र कर रहे थे about 1857. Now, there was a British chronicler by the name Therra Lowe. He was chronicling what was happening in India in 1857. He wrote in the chronicle, "If the infanticide Rajput – this is according to the British; these are not my words – the bigoted Brahmin, the fanatic Musalman the pig eater and the pig hater, the cow killer and the cow worshipper, all of them revolted together, there is no future for the British in India."

Sir, we achieved our Independence because of that unity. Today, we are paying homage to all those who created that history and made India independent, for which all of us are proud. A. K. Gopalan hoisted the National Flag in a jail, the Vellore Jail in Tamil Nadu, on 15th August, 1947. So, it is that combined history, the uniqueness of which is this unity.

Today, we are observing the 75th Anniversary of the Movement and looking into the future. The hon. Prime Minister said outside in his 'Man ki baat'... ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please. ...(*Interruptions*)

SHRI SITARAM YECHURY: He chose the title. There he said, 'from 1942 to 1947, these were the five crucial years and, therefore, from 2017 to 2022, let us achieve that objective.' Now, Sir, what is that objective? In 1947, we became independent. We are all proud. We are all children of independent India. We have inherited that Indian nationhood, Indian nationalism. In those five years we also saw the Partition of India. We saw the communal polarisation in those five years that led to this unfortunate Partition, aided by the British. So, if you are alluding to those five years, there is an ominous sign. It is a very dark cloud. The silver lining is here. There is a dark cloud, but these five years...

SHRI RAVI SHANKAR PRASAD: Sir, this is not fair. He said, unemployment, education ...(*Interruptions*)... This is wrong quoting of the... ...(*Interruptions*)... It is going on the record and I must protest. ...(*Interruptions*)... When he is saying that... ...(*Interruptions*)... That is unfair. Sir, I didn't want to join issues. Today is a pious day. He should not talk against the Prime Minister. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yechuryji, don't get into controversies. ...(*Interruptions*)... Please try to avoid controversies. ...(*Interruptions*)...

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, I don't know why my hon. friend and Minister is getting so excited. It is the hon. Prime Minister who said that communalism must quit India. I am talking of that communalism. It was the Prime Minister of India and your Leader who said that communalism must quit India. I am asking, are we doing anything to make it quit?

SHRI DIGVIJAYA SINGH: No, on the contrary... ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, please don't comment.

SHRI SITARAM YECHURY: That is the resolve I am talking of. Why am I reminding you, while talking about those five years, of the other factor of the unfortunate Partition of this subcontinent? वहां पर पाकिस्तान बन गया। हिन्दुस्तान एक

[Shri Sitaram Yechury]

धर्मनिरपेक्ष जनतंत्र का गणतंत्र बना। वह हमारे संविधान की बुनियाद है। अगर आज हमें इस धर्मनिरपेक्ष जनतंत्र के गणतंत्र या गणराज्य को बरकरार रखना है, मजबूत करना है, तो वह लक्ष्य आगे के लिए होना चाहिए। What is the meaning of observing the 75th Anniversary of the Quit India Movement if today what has to quit India does not quit India? You have to quit these economic policies that are increasing unemployment, that are increasing poverty, that are increasing the divide between the rich and the poor, that are creating these two Indias. In the last three years, when Dr. Manmohan Singh was the Prime Minister, we used to have a lot of discussion here, saying that we are creating two Indias, one for the poor and one for the rich, that wealth amounting to 49 per cent of the GDP in 2014 was held by one per cent of the Indian population. Today, what is the situation? Nearly 60 per cent, 58.4 per cent — that was last year's figure; it would have gone up now – of our GDP is in the hands of one per cent of our population. Is this the India of the dreams of 1947 when we became independent? Is that the India where we have the youth power today which is the biggest in the world? We are the youngest country. ...(*Time bell rings*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, the British also rang many bells, but Gandhiji never stopped. ...(*Interruptions*)... Till they quit India, he did not stop. ...(*Interruptions*).. Sir, my point is, if today we give the call of 'Quit India' ...(*Interruptions*)...

SHRI RAVI SHANKAR PRASAD: I request Mr. Yechury's Party to let him continue in this House for a good debate to continue. ...(*Interruptions*)...

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): He may be Gandhian, but you cannot be called as British. ...(*Interruptions*)...

SHRI SITARAM YECHURY: If there is anything that must quit India today on its 75th Anniversary, it is the neo-liberal economic policies that are impoverishing the mass of my people; it is this communalism that is dividing my country and disuniting our people in the struggle to create a better India. You, please, understand what should be the resolve. It is not just recollecting the memory of the past — that is very good, we can recollect — we can also apportion the blame; we can also say who did what. But the question is: Are we going to move forward or are we going to look backward?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, that is a point.

श्री सीताराम येचुरीः अब आप भविष्य के उजाले की ओर जाएंगे या भूत के अंधेरे की ओर जाएंगे?

श्री आनन्द शर्माः ये भूत की तरफ जा रहे हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री सीताराम येचुरीः भूत के अंधेरे में जाने की इनकी जो विचारधारा है, हमें उसका बहिष्कार करने की जरूरत है। बिना बहिष्कार किए, हम भविष्य के उजाले में नहीं जा सकते। इसलिए मैं एक ही बात कहना चाहता हूं, जिसे कहकर मैं बैठ जाऊंगा। ...(**समय की घंटी**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay; now, please conclude.

SHRI SITARAM YECHURY: I am concluding. You referred to the INA trials, you referred to all these instances and the Royal Naval Mutiny. During that period, there was a song which all of us have grown up with. I think we should re-sing that song today and make that our resolve. And that song was —

"मंदिर मस्जिद गुरुद्वारों में बांट दिया भगवान को,

धरती बांटी, सागर बांटा, मत बांटो इंसान को।"

And that is why, Sir, the movement forward should be for strengthening the secular democratic republic of India and not for creating a Hindu-Pakistan in India, and that is how we have to move together. ...(*Interruptions*)... So, let us observe Quit India by saying, quit neoliberal reforms, quit communalism. Thank you.

श्री प्रसन्न आचार्य (ओडिशा)ः उपसभापति महोदय, आज के इस पवित्र अवसर पर सबसे पहले मैं अपने स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित करना चाहूंगा। भारत में जब 1942 का 'भारत छोड़ो आन्दोलन' चला, उस समय 8 अगस्त को मुम्बई में जो गांधी जी का भाषण हुआ, हमारे AIADMK के लीडर अभी जिसकी चर्चा कर रहे थे, मैं भी उसी भाषण के कुछ अंश यहां quote करना चाहूंगा, and I quote, "I believe that in the history of the world, there has not been a more genuine democratic struggle for freedom than ours." आजादी के लिए हमारा जो आन्दोलन था, it was a democratic struggle and nowhere in the world this kind of a struggle has happened. I further quote: "But it is my conviction that in as much as these struggles were fought with the weapon of violence, they failed to realize the democratic ideal. In the democracy, which I have envisaged, a democracy established by non-violence, there will be equal freedom for all. Everybody will be his own master. It is to join a struggle for such a democracy that I invite you today. Once you realize this, you will forget the differences between the Hindus and Muslims, and think of yourselves as Indians only, engaged in the common struggle for Independence." हमारी आजादी की लड़ाई में उस समय मुख्य रूप से तीन values थे – हमें प्रजातांत्रिक democratic देश बनाना है, हमें non-violence या अहिंसा के आधार पर चलना है और सर्वोपरि, यहां 'सर्वधर्म समन्वय' या secularism स्थापित करना है। अभी शरद यादव जी कह रहे थे कि हमें इतिहास से सबक सीखना चाहिए। मुझे भी लगता है कि हम इतिहास से सबक नहीं सीखना चाहते। जिस प्रजातांत्रिक भारत को बनाने के लिए इस देश के लाखों-करोड़ों लोगों ने गांधी जी के नेतृत्व में, सुभाष जी के नेतृत्व में कुरबानी दी, 28 साल बाद भी हमने इतिहास से सबक नहीं सीखा। उन मूल values को भूल गए। उसी का परिणाम है कि 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के क्रांतिकारी नेता, जयप्रकाश नारायण जी को बुढ़ापे में दूसरा स्वतंत्रता संग्राम

[श्री प्रसन्न आचार्य]

1975 में शुरू करना पड़ा। उस समय ये लोग सरकार में थे, जो आज विपक्ष में हैं और हमारे ये भाई विपक्ष में थे, जो आज सरकार में हैं। इस अवसर पर मैं निवेदन करना चाहूंगा कि उन values को आप भी मत भूलिए, बिल्कुल मत भूलिए।

महोदय, गांधी जी का सपना था — एक सांप्रदायिकता-विहीन भारत का निर्माण करना। अभी मैं सुन रहा था, हमारे माननीय सदस्य बोल रहे थे कि हमें कांग्रेस मुक्त भारत चाहिए। अभी यहां तृणमूल कांग्रेस के एक माननीय सदस्य बड़े उत्तेजित होकर बोल रहे थे - 'बीजेपी भगाओ', 'भारत बचाओ' या 'बंगाल बचाओ'। महोदय, इस देश में प्रजातंत्र है। यहां कांग्रेस भी रहेगी और भारतीय जनता पार्टी भी रहेगी। हमें अगर किसी से मुक्ति चाहिए तो भ्रष्टाचार से मुक्ति चाहिए। हमें भ्रष्टाचार-मुक्त भारत चाहिए, सांप्रदायिकता से मुक्त भारत चाहिए। ...(**समय की घंटी**)... भेदभाव से मुक्त भारत चाहिए। इस दिशा में हमें काम करने की जरूरत है। आज के अवसर पर, जब हम 'भारत छोड़ो आन्दोलन' की 75 वर्ष वर्षगांठ मना रहे हैं, इस माननीय सदन में जितने सदस्य बैठे हैं — जिस आजादी के scenario में हमें यह सदन मिला है, जिनकी कुरबानी के कारण आज हम यहां संसद में, Parliament में बैठे हैं, केवल इतना ही नहीं, बल्कि जिन्होंने दुनिया का सबसे बेहतर संविधान हमें दिया है, उन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि देने के लिए हम सबको मिलकर सांप्रदायिकता-विहीन भारत और भ्रष्टाचार-मुक्त भारत बनाना होगा, धन्यवाद।

श्री वीर सिंह (उत्तर प्रदेश): उपसभापति जी, आज हम 'भारत छोड़ो आन्दोलन' की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर सदन में चर्चा कर रहे हैं। 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में हमारे देश के करोड़ो लोगों ने भाग लिया था। इस देश को आज़ाद बनाने में करोड़ों वीर सपूतों ने, मजदूरों, गरीबों और किसानों ने इस आन्दोलन में भाग लिया था। स्वतंत्रता के आन्दोलन में न जाने कितनी मांओं ने अपने बेटे खोए और कितनी बहनों ने अपने भाइयों को खोया। इस आन्दोलन में सबकी अहम भूमिका रही थी। महात्मा गांधी जी के आह्वान पर, देश में उस समय 'भारत छोड़ो आन्दोलन' छेड़ा गया। इस देश को आजादी दिलाने में हमारे तमाम नेताओं का योगदान रहा है।

उपसभापति महोदय, हमारी पार्टी बहुजन समाज पार्टी के संस्थापक, माननीय कांशीराम जी कहा करते थे कि इस देश के करोड़ों दलितों, पिछड़ों और शोषितों को अंग्रेजों से आज़ादी तो मिल गई, किन्तु हमारे देश में अभी भी सामन्तवादी व्यवस्था है, गैर-बराबरी की व्यवस्था है, उससे हमें आजादी नहीं मिली है। उस आजादी को हासिल करने के लिए हमें अभी संघर्ष करना है। आज भी हमारे करोड़ों लोग गैर-बराबरी के कारण कष्ट उठा रहे हैं। करोड़ों दलित, शोषित समाज के लोग अभी भी सामन्तवादी व्यवस्था के कारण स्वतंत्र महसूस नहीं करते हैं। देश के अनेक भागों में आज भी हम अपने बेटे की बारात घोड़ी पर चढ़ाकर नहीं निकाल सकते। फिर यह कैसी आज़ादी है, इस तरफ हमें ध्यान देना होगा।

इस देश की आज़ादी की लड़ाई में परमपूज्य डा. भीमराव अम्बेडकर साहब का बहुत अहम रोल रहा है, लेकिन मुझे बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि न तो हमारे विपक्ष के नेता ने, न सत्तापक्ष की तरफ से किसी ने और न ही किसी दूसरे दल की तरफ से, किसी ने यहां बाबा साहेब का नाम नही लिया। मैं शरद जी का धन्यवाद अदा करता हूं कि उन्होंने बाबासाहेब का नाम लिया। मैं बताना चाहता हूं कि परमपूज्य डा. भीमराव अम्बेडकर साहेब ने इस देश के

दलितों और शोषितों के लिए उस समय कितनी लड़ाई लड़ी थी। इन लोगों को पहले वोट का अधिकार नहीं मिलता था। वोट का अधिकार लेने के लिए उन्होंने कितनी लड़ाई लड़ी थी! उन्होंने दलितों के लिए लंदन में जाकर अपनी बात रखी थी। उस समय कितना भेद-भाव था! उस समय परम पूजनीय बाबा साहेब ने कितना संघर्ष किया था! इस देश की आज़ादी की लड़ाई में सबका रोल रहा है। यहां लक्ष्मीबाई जी का जिक्र किया गया। असल में लड़ाई किसने लड़ी थी? लड़ाई झलकारी बाई ने लड़ी थी, किन्तु इतिहासकारों ने झलकारी बाई का नाम कहीं भी नहीं दिया, क्योंकि झलकारी बाई अनुसूचित जाति की थीं। रानी कहीं लड़ाई लड़ती होंगी! रानी महल में रह सकती है, लड़ाई नहीं लड़ सकती है। झलकारी बाई ने लड़ाई लड़ी थी और उन्होंने अंग्रेज़ों से टक्कर ली थी, किन्तु उनका कहीं नाम नहीं आता है।

महोदय, हम आज के दिन आज़ादी के आंदोलन का 75वां साल मना रहे हैं, जिसमें सबका योगदान रहा है। मैं यही कहना चाहूँगा कि आज देश के विभिन्न हिस्सों में जो तरह-तरह के अपराध हो रहे हैं, लोगों पर अन्याय-अत्याचार हो रहे हैं — आज प्रजातंत्र है और प्रजातंत्र में वोट की शक्ति होती है। आज हम अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के जो 131 सांसद चुनकर आते हैं, वे परम पूजनीय डा. भीमराव अम्बेडकर जी की मेहरबानी से आते हैं। अगर भारत के संविधान में वे प्रोविज़न नहीं करते, तो आज अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के 131 एमपीज़ जीतकर लोक सभा में नहीं आ पाते। किन्तु दुःख उस समय होता है, जब देश में रोहित वेमुला जैसा कांड होता है, गुजरात में दलितों का कांड होता है, हरियाणा में कांड होता है, तो कोई भी दलित सांसद नहीं बोलता है। ...(**समय की घंटी**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Please conclude. ...(*Interruptions*)...

श्री वीर सिंहः पूरे देश में जब दलितों के ऊपर अन्याय-अत्याचार होता है, तो एक ही नेता, बहन कुमारी मायावती बोलती हैं, बाकी कोई नहीं बोलता है। ...(**समय की घंटी**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude.

श्री वीर सिंहः इसलिए यह जो आज़ादी है, यह आज़ादी होनी चाहिए, हर तरह की आज़ादी होनी चाहिए। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Veer Singh ji, please conclude.

श्री वीर सिंहः बाबा साहेब ने जो हमें भारत के संविधान में अधिकार दिए हैं, वे हमको मिलने चाहिए, पूरे देश में सबको समान माना जाना चाहिए। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude.

श्री वीर सिंहः इस देश को बाबा साहेब की विचारधारा बचा सकती है, बाबा साहेब की विचारधारा आगे ले जा सकती है। ...(**समय की घंटी**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude. ...*(Time-bell rings)*... Your time is over.

श्री वीर सिंहः हमें भारत के संविधान के अनुसार चलना चाहिए। ...(**समय की घंटी**)... भारत के संविधान के अनुसार चलकर हमें आगे बढ़ना चाहिए।

श्री उपसभापतिः ठीक है, अब आप बैठिए। Now, Shri Majeed Memon.

श्री वीर सिंहः अंत में, मैं यही निवेदन करूँगा कि देश की आज़ादी में जिन महान देशभक्तों ने भाग लिया, उनको मैं श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूँ, धन्यवाद।

श्री उपसभापतिः धन्यवाद। Now, Shri Majeed Memon. You have three minutes.

श्री माजीद मेमन (महाराष्ट्र)**:** उपसभापति जी, आज का यह दिन एक नेशनल फेस्टिवल है। 15 अगस्त की आज़ादी, जिसको हम हर साल बड़ी उत्सुकता के साथ मनाते हैं, उस 15 अगस्त की आज़ादी को प्राप्त करने में 9 अगस्त, 1942 का यह एक बहुत बड़ा कदम था और अगस्त क्रांति मैदान का जो इतिहास है, उसको मुझे दोहराने की कोई आवश्यकता नहीं है।

सर, मैं मुम्बई में रहता हूँ और रोज़ाना अपने दफ्तर आते-जाते हुए अगस्त क्रांति मैदान से गुजरता हूँ और मुझे हर रोज हज़ारों-लाखों शहीदों की याद आती है। मुझे उन लोगों की याद आती है, जिन्होंने अपना ख़ून-पसीना और अपने प्राण आज़ादी के लिए सर्फ कर दिए, न्यौछावर कर दिए। हमने महात्मा गांधी के नेतृत्व में यह जो आज़ादी प्राप्त की है — हमें आज कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी की कोई बात नहीं करनी, कोई आलोचना नहीं करनी है। सर, मैं तीन मिनट के समय में कुछ महत्वपूर्ण चीज़ें आपके सामने रखना चाहूँगा।

Sir, 'Quit India Day' is a historical day for our beloved country as it reminds us and our young generation about the constant struggle and great sacrifices of thousands of our predecessors under the dynamic leadership of the Father of the Nation, Mahatma Gandhiji, to achieve freedom. It was this day when the movement to drive British rulers away from our soil picked up momentum, and, therefore, the sweat, blood and lives of our patriots and freedom fighters bore fruits on 15th of August, 1947.

Sir, 75 years have elapsed since we acquired political independence but, unfortunately, we are yet to achieve some of our cherished goals. Sir, the dreams of freedom from poverty, freedom from hunger, freedom from unemployment, freedom from discrimination and freedom from injustice, have still remained unfulfilled.

Sir, we all have to work together to fulfil Mahatma Gandhi's dream of a 'Free India' — India which is free from violence, hatred and discrimination; but, Sir, unfortunately, we are yet to fulfil that dream. We all have to struggle together, irrespective of our different ideologies and irrespective of our different political affiliations. As a nation, this is in national interest that all of us rise above our differences and remind ourselves that we have got a duty that we will have to free India from all these evils. Now, I must say this that unemployment and poverty have grown over the years and unfortunately मकान नहीं है, आवास नहीं है, मुलाज़मत नहीं है,

अनएम्प्लॉयमेंट है और अभी जैसा कि हमारे साथी सीताराम जी ने एक शेर पढ़ा, मैं भी एक शेर पढ़ना चाहता हूं। हम लोग धर्म के नाम पर लड़ते हैं, हिन्दू को मुसलमान से लड़ा दिया जाए, सिख को हिन्दुओं से लड़ा दिया जाए, इन तमाम चीजों से हटकर जैसा कि एक कवि ने बात कही है मंदिर मस्जिद के झगड़े के बारे में, तो इससे हमें यह सबक लेना चाहिए।

"किस काम के ये मंदिर मस्जिद, किस काम के ये गुरुद्धारे,

भगवान के बेटे बिन मकान, जब फिरते मारे-मारे।"

हमें चाहिए कि आवास की व्यवस्था करें, हमें चाहिए कि हम मुलाज़मत की व्यवस्था करें, हमें चाहिए कि गरीब और अमीर के फासलों को कम करें, हमें चाहिए कि हम अत्याचार मिटाएं, हमें चाहिए कि हम hatred को मिटाएं। यह नफरत के बड़े-बड़े पहाड़ खड़े किए जा रहे हैं। आपस में लोगों को बांटने की कोशिश की गई, यह कैसी फ्रीडम है? आजादी के 75 वर्ष के बाद हमने क्या आजादी प्राप्त की है, हम इन तमाम चीजों के गुलाम हो गए हैं, मुफिलसी के, बेरोजगारी के, मजबूरी के, नाइंसाफी के। आज के इस शुभ दिन मैं शुभकामनाएं दे रहा हूं अपनी पार्टी की तरफ से, मेरे नेता शरद पवार जी की तरफ से, हमारे सभी सांसदों की तरफ से, सभी कार्यकर्ताओं की तरफ से। मैं समझता हूं कि हम सबकी कोशिश यह हो कि हम इन तमाम evils से लड़ाई करें, जब तक हम लोग इनसे फ्री नहीं हो जाएंगे, तब तक हमने आजादी प्राप्त नहीं की, धन्यवाद।

SHRIMATI KANIMOZHI (Tamil Nadu): Thank you, Mr. Deputy Chairman, Sir.

"Thanneer vittom valarthom, sarvesa ippayirai kanneeral kathom"

This was said by Bharathi. He said that we pour our tears to grow the plant of freedom not just water. The sacrifices our women and men have made for the freedom struggle and to make India free are beyond words. There are people like Puli Thevan, Velu Nachiyar, Subramaniya Siva, V.O. Chidambaram Pillai, Bharathi, Dheeran Chinnamalai, Kodi Kaththa Kumaran, etc. There are so many names from Tamil Nadu and the people who died in the Sepoy Mutiny in Vellore. There are so many names of men and women from Tamil Nadu and from different States who gave up their lives for the freedom struggle.

We all are proud today when we remember the Quit India Movement and our freedom struggle, but there are so many people in this list who did not speak the national language, who were not Hindus, who did not belong to any religion and who ate what they wanted. Are they in any way less of Indians? Are they less than anybody else? No. But, today, if I don't speak Hindi, people think that I am less of an Indian. If I don't eat what some people think is right, or if I am an atheist, I am not an Indian. Why have we become this? ...(*Interruptions*)... Sir, we have struggled so much. I am not blaming anybody. Every Government – every State Government and every Central Government – works for its people. There is a line which I would like to quote by a Tamil poet. He says, "*Ethanai ber izhuthenna, innum serikkul varavillai ther*." There are many people who have pulled the strings

[Shrimati Kanimozhi]
but the temple cart has not yet come into the dalit slum. That is the truth. We still have untouchability. We are battling with untouchability. People are being treated badly. In Tamil Nadu and many States, people are not allowed to eat together. There are honour killings. We should be ashamed to say that even today honour killings are happening in this country.

Look at the way women are being treated. There is unemployment. Every Government comes up with a different education policy. Are our children getting up in the morning happily to go to schools? No. It's a struggle. Are we thinking of modern ways? Do we really care about our children as to what they are being taught and they get the best of education? We are not. Today, what is the state of the farmers? We are not able to link rivers. We are not able to share water and settle disputes between States. Is this what our freedom fighters dreamt of? Is this what we wanted? When are we going to achieve what they fought for?

We cannot talk about freedom; we cannot feel proud of this nation when 50 per cent of the population in this country is being treated so badly. What happened recently in the stalking incident? It happens during every Government's regime, I am not denying it. But elected representatives, leaders of this country are questioning the integrity of that girl. Whether it is a rape, whether it is stalking, whether it is an acid attack, it is always the woman who is being questioned. Why? Are we not ashamed of ourselves? We should be ashamed of even questioning why the woman is out. We ask: "Does she not know that it is not a safe country? Why is the woman outside at this time?" Are we not ashamed to say that it is not a safe country? We should protect them. Are we doing that? We are not. We are not able to pass the Women's Reservation Bill. We saw the struggle to pass it in this House. You were there. Most of us were there. We saw the struggle. Why can we not pass this Bill? What right do we have to pass any Bill in this country without enough representation of women in any House? ...(*Interruptions*)... We are passing Bills without our opinion, without our consent.

Sir, the only real prison is fear and the only real freedom is freedom from fear. Aaung San Suu Kyi said this. If our women, if our people, if our dalits, if the underprivileged, the backward communities and the minorities are not free from fear of the future, then, there is nothing to feel proud of. Thank you.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Sanjay Raut, three minutes.

श्री संजय राउत (महाराष्ट्र): सर, three minutes में क्या होगा? इतने लोग शहीद हो गए।

श्री उपसभापतिः हो गए, इसलिए आपको three minutes बोलना है। Three minutes for everybody.

श्री संजय राउतः सर, हमें आधा घंटा बोलने के लिए समय दे दीजिए।

श्री उपसभापतिः आप ऐसा कीजिए, आप बाहर जाकर आधा घंटा बोलिए। इधर three minutes में ही बोलना है।

श्री संजय राउतः सर, यहां पर बोलना है। बाहर तो मैं बोलता रहूंगा। उपसभापति महोदय, मैं उस मुम्बई का और महाराष्ट्र का निवासी हूं, प्रतिनिधि हूं, जहां से 9 अगस्त को ऐतिहासिक ग्वालिया टैंक "भारत छोड़ो" का नारा दिया गया। महात्मा गांधी जी ने मुम्बई से वह नारा दिया था। मुम्बई आज पूरे देश का एक मनी सेंटर बन गया है। मुम्बई को हमने आर्थिक राजधानी बना दिया है, लेकिन मुम्बई का जो चरित्र है, एक ज़माने में मुम्बई देश के स्वतंत्रता संग्राम की राजधानी थी। मुम्बई के लाखों मिल मजदूर, गरीब जनता, जो मिल में काम करते थे, 200-300 मजदूर जो मिल में काम करते थे, वे हमारी आज़ादी के सिपाही थे। जब 9 अगस्त को गांधी जी ने नारा दिया, तब सभी नेताओं को पकड़ लिया गया, लेकिन लड़ने वाले मिल मजदूर थे, जो सड़क पर उतरे, उन्होंने लाठियां खाईं, गोलियां खाईं और देश की आज़ादी के लिए शहीद हो गए। आज़ादी के बाद मिल मजदूर, चार लाख मिल मजदूर शहीद हो गए, हम उनको नहीं बचा पाए। वे भूख से मर गए, बेरोजगारी से मर गए, न उनको घर मिला, न उनको रोजगार मिला, न उनकी भूख मिटा पाए, न हम उनकी अगली पीढ़ी को बचा पाए। जो मिल मजदूर शहीद हुए थे, उनको भी हमें याद करना चाहिए, उन्होंने ही सही मायने में आज़ादी की लड़ाई लड़ी।

सर, "भारत छोड़ो आंदोलन" की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उस आंदोलन में हर कोई नेता था, सिर्फ गांधी जी नेता नहीं थे या आपने जो बड़े-बड़े नाम लिये, ये सभी नेता नहीं थे, लेकिन जो सामान्य आदमी था, जो मिल मजदूर था, जो इस देश का श्रमिक था, वह नेता था। मैं आज़ाद साहब का भाषण सुन रहा था, आज़ादी का आंदोलन सिर्फ एक पार्टी की monopoly नहीं थी। इस आंदोलन में सभी विचारों, सभी धर्मों और सभी जातियों के लोग शामिल थे। गांधी जी थे, पंडित नेहरू थे, लोहिया जी थे- आपने अम्बेडकर जी का नाम नहीं लिया, लेकिन वीर सावरकर जी का नाम भी नहीं लिया। कांग्रेस को भूलने की बीमारी है। आप उन्हें भूलो मत ...(**व्यवधान**)...

श्री आनन्द शर्माः वह माफी मांगकर आ गए थे। ...(**व्यवधान**)...

श्री संजय राउतः आप माफी की बात मत करो। मैं यह कहूंगा कि * भी देशभक्त था। हम गांधी हत्या का निषेध करते हैं, लेकिन सभी देशभक्त इस देश में थे ...(**व्यवधान**)... आप एक दिन अंडमान रहिए ...(**व्यवधान**)... आपको पता चल जाएगा। आप अंडमान जाकर एक दिन रहिए। ...(**व्यवधान**)... आप वीर सावरकर को नहीं भूल सकते। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, please. ...(*Interruptions*)... Please, please. ...(*Interruptions*)... Please allow him to speak. ...(*Interruptions*)...

श्री संजय राउतः सर, इस आंदोलन में ...(**व्यवधान**)...

---

*Expunged as ordered by the Chair.

SHRI ANAND SHARMA: History cannot be falsified. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, please. ...(*Interruptions*)...

श्री संजय राउतः अहिंसा ने काम किया है, लेकिन इस देश में ऐसे बहुत से क्रांतिकारी थे, जिन्होंने बम बनाए, जिन्होंने British Parliament पर बम फेंके, जिन्होंने बंदूकें उठायीं, हमें उन्हें भी याद करना चाहिए। सर, इसी कारण ब्रिटिश साम्राज्य में दहशत फैली थी ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. ...(*Time bell rings*)... All right, the time is over. ...(*Time bell rings*)...

श्री संजय राउतः सर, यह इतिहास का एक पन्ना है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, please. ...(*Interruptions*)...

श्री संजय राउतः महात्मा गांधी जी ने "अंग्रेजो भारत छोड़ो" का नारा देकर ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Sanjay Rautji, please. ...(*Time bell rings*)...

श्री संजय राउतः अंग्रेजों के विरुद्ध आजादी की अंतिम लड़ायी की घोषणा कर दी थी, जिस कारण ब्रिटिशर्स के मन में दहशत फैल गयी थी।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, all right. ...(*Time bell rings*)...

श्री संजय राउतः महोदय, 9 अगस्त देश की जनता की उस अभिव्यक्ति का एक नारा था जिस में गांधी जी ने कहा था कि हमें आजादी चाहिए और हम आजादी लेकर रहेंगे।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, now, please conclude. ...(*Time bell rings*)...

श्री संजय राउतः गांधी जी ने इस अवसर पर कहा था कि मैं एक ही चीज लेने जा रहा हूं और वह है आजादी।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, Shri Naresh Gujral. ...(*Time bell rings*)...

श्री संजय राउतः मैं आपको एक मंत्र देता हूं, "करेंगे या मरेंगे।" आजादी डरपोकों के लिए नहीं है, जिसमें कुछ करने की ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, please. ...(*Time bell rings*)...

श्री संजय राउतः और त्याग करने की हिम्मत है।

श्री उपसभापतिः अब आप बैठिए।

श्री संजय राउतः सर, एक मिनट।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no time please. ...(*Interruptions*)... No, you had already taken four minutes. ...(*Interruptions*)... No, please.

श्री संजय राउतः सर, जैसा कि जेटली साहब ने कहा कि आज हमारे सामने सब से बड़ा प्रश्न इस देश में हमारे सार्वजनिक मूल्य हैं, उनकी विश्वसनीयता पर प्रश्न चिह्न लग गया है। उसके लिए कौन जिम्मेदार है? हमें इस बारे में सोचना है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, ...(*Time bell rings*)... No, no, please. ...(*Time bell rings*)...

श्री संजय राउतः इस देश पर जिन्होंने 60 साल तक राज किया है, राजनीति की है **...(व्यवधान)...**

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no, sit down. Now, Shri Naresh Gujral. ...(*Interruptions*)...

श्री संजय राउतः इस देश की **...(व्यवधान)...**

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no, that is all. ...(*Interruptions*)... Now, Shri Naresh Gujral. ...(*Interruptions*)... Nothing more will go on record. ...(*Interruptions*)... You have taken five minutes. ...(*Interruptions*)...

श्री संजय राउतः *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nothing more will go on record. ...(*Interruptions*)... Shri Naresh Gujral, please start. ...(*Interruptions*)...

श्री संजय राउतः *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is not going on record. ...(*Interruptions*)... You have taken five minutes in place of three minutes. ...(*Interruptions*)... Sit down. ...(*Interruptions*)... It is not going on record. ...(*Interruptions*)... Now, Shri Naresh Gujral. ...(*Interruptions*)...

श्री संजय राउतः *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is not going on record. ...(*Interruptions*)... Now, Shri Naresh Gujral. ...(*Interruptions*)... आपने 5 मिनट लिए, बाकी लोगों को मैंने 3 मिनट दिए। आप बैठिए, बैठिए। Now, Shri Naresh Gujral. ...(*Interruptions*)... Naresh Gujralji, you stand up and start speaking. ...(*Interruptions*)...

SHRI NARESH GUJRAL (Punjab): How can I start speaking? Sir, two people can't speak simultaneously.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is not going on record. ...(*Interruptions*)... That is not recorded; you don't worry. ...(*Interruptions*)...

SHRI NARESH GUJRAL: Sir, two people can't speak simultaneously.

---

*Not Recorded

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no; you can speak; otherwise, you will lose your time. ...(*Interruptions*)...

SHRI NARESH GUJRAL: Because we don't have a Jugalbandi.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Otherwise you will lose your time. ...(*Interruptions*)... So, please start. ...(*Interruptions*)... No, Nareshji, you please start; otherwise; I will call the next speaker. ...(*Interruptions*)... No; you have to start. ...(*Interruptions*)... You have to obey the Chair. ...(*Interruptions*)...

SHRI NARESH GUJRAL: Sir, how can I speak?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, you can speak when that is not going on record. ...(*Interruptions*)... When I said that it is not going on record... ...(*Interruptions*)...

SHRI NARESH GUJRAL: Sir, this is a new precedent that we should have a *Jugalbandi*.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You speak, please. Take three minutes.

SHRI NARESH GUJRAL: Sir, Seventy-five years ago, Mahatma Gandhi's call galvanized the entire nation. Almost one lakh people went to jail—old, young, women and people from the entire country, from north to south. That was the call of 'Do or Die' which got us our Independence. If you look at history, Churchill came down very heavily on these freedom fighters. Despite the fact that many Indian soldiers were participating in World War II, he did not care. He did not care even for the advice given to him by President Roosevelt. He suppressed or he tried to suppress the Movement but he failed. Sir, Punjab has a special role here. Earlier, if you remember, the Cripps Mission had failed. Lala Lajpat Rai had been severely beaten up by the British forces. He gave up his life fighting for the cause of Independence. Sir, for me, this day holds special significance. On this day, my entire family went to jail. My grandfather, Shri A. N. Gujral, my grandmother, Mrs. Pushpa Gujral, who was an illiterate woman, followed suit and my 22-year-old father, Shri I. K. Gujral, they all went to jail. Not only just the three of them, my two *buas*, my aunts, who were five and eight years old, were also dragged to jail since my grandmother was going. My uncle, Shri Satish Gujral, the famous artist, who was deaf and barely 13 or 14 years old, was left alone in the care of servants for months together because such was the spirit in them that they must do something for this country.

Sir, today, we have gathered here to pay homage to our great leaders—Lokmanya Tilak, Mahatma Gandhi, Subhash Chandra Bose, Pt. Nehru, Maulana Azad, Sardar Patel, Lala Lajpat Rai, Dr. Rajendra Prasad—and many, many more, who made us free. Today we breathe free, for which we thank them. But are we realizing their

1.00 P.M.

dream—their dream of a just India, their dream of a secular India, their dream of a tolerant India? Sir, I feel, we can make speeches, but, collectively, today, we should not indulge in any blame game. We should all reflect as to how do we achieve their principles, their objectives and what they have fought for. Thank you very much.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is the point. Thank you very much. Now Shri D. Raja. You have only three minutes.

SHRI D. RAJA (Tamil Nadu): Sir, I join the entire House to pay my solemn homage to the martyrs of our freedom movement. My party, the Communist Party of India, along with the Indian National Congress and other forces, stood in the forefront of our freedom movement. My party made supreme sacrifices in the struggle against British Raj for the Independence of the country. Sir, endorsing what my colleague, Shri Sitaram Yechury, has said, I also want to put on record that Dr. Shankar Dayal Sharma, who was the President of India from 1992-1997, while addressing the nation made it clear by quoting a despatch of the British Government in India of 5th September, 1942, to the British Prime Minister regarding the role of the Communist Party of India in Quit India Movement and I quote, "After large scale strikes in mills in Kanpur, Jamshedpur and Ahmedabad, the behaviour of many of its members, that is, the members of the Communist Party of India, proves what has always been clear, namely, that it is composed of anti-British revolutionaries." Sir, as an anti-British revolutionary, as an inheritor of anti-British struggle, I speak in this House that communists did play a glorious role, heroic role in the struggle for Independence. Sir, from Mahatma Gandhi to Pt. Nehru, Patel, Ambedkar, all the names are being taken. I will take only one name, that is, M. Singaravelu, who hailed from a fishermen community, who was considered to be the first communist in South India, who addressed the Gaya session of the AICC and addressed the delegates as 'comrades'. It is not only that the communists gave *Purna Swaraj* slogan,... they also addressed the Congressmen as comrades saying we all should fight for independence, and upliftment of the poor people in the country. Freedom means freedom for the *Dalits*, freedom for all the suppressed sections and discriminated sections of our society.

Sir, the second point which I want to make is on 8th August, 1942, the British Police went to arrest Mahatma Gandhi.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, three minutes are over.

SHRI D. RAJA: Sir, I will finish. Mahatma Gandhi asked the British Police for some time. He went inside and when he came back, he had three things in

[Shri D. Raja]
his hands. One, was a copy of Bhagwat Gita, the other one was a copy of Quran and the third one was Charkha. These were the three things collected by Mahatma Gandhi. What is the relevance of those things? I leave it to the House. Now, what are we discussing? Even the Leader of the Opposition quoted Jawaharlal Nehru. It was Jawaharlal Nehru who moved 'Quit India' resolution; and Jawaharlal Nehru made it very clear that 'Quit India' resolution was not about ...(*Time-bell rings*)... I will finish.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no, please sit down. ...(*Interruptions*)... I have to take the sense of the House. ...(*Interruptions*)... It is already 1 o'clock, sit down. ...(*Interruptions*)... Now, I want to take the sense of the House. ...(*Interruptions*)... Take your seat. ...(*Interruptions*)... Take your seat, ...(*Interruptions*)... Okay, okay.

SHRI D. RAJA: India should move forward on the ideals of secularism, and social justice.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, hon. Members, I want to take the sense of the House. In fact, I have got four more requests. Shri Ramdas Athawale; Shri A. V. Swamy, he is saying that he was a member of the *Vanar Sena*, at the age of 12, during the Quit India Movement. Shrimati Rajani Patil; she says her grandfather was hanged by the Britishers in 1915, and Shri Husain Dalwai. If we extend the time of the House by ten minutes, that is, up to 1.10 p.m., I can give each Member two minutes.

SHRI GHULAM NABI AZAD: Who claims to be the Chairman? ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: A member of the *Vanar Sena*. Mr. A.V. Swamy has written to me that he was a member of the *Vanar Sena*, at the age of 12. ...(*Interruptions*)... If the House agrees, I will give two minutes to each of them. So, we extend the time of the House up to 1.10 p.m. Shri Ramdas Athawaleji, only two minutes for you. You never stop, when I say, 'conclude'. Now, you have to stop.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF SOCIAL JUSTICE AND EMPOWERMENT (SHRI RAMDAS ATHAWALE): Hon. Deputy Chairman, Sir, Mahatma Gandhi said, "*Angrezo*, Quit India because we want sweet India."

आज दिल्ली और देश भर में बहुत गिर गया है पानी,
क्योंकि महात्मा गांधी और नरेंद्र मोदी जी की बहुत अच्छी है वाणी।
महात्मा गांधी जी ने अंग्रेज़ों को बोला था "भारत छोड़ो",
नरेंद्र मोदी जी आपको बोल रहे हैं, भारत जोड़ो।
डा. बाबा साहेब अंबेडकर जी का संविधान बोल रहा है जातिवाद
और धर्मवाद को गाढ़ो,
जिनको संविधान मंजूर नहीं है, उनको मैं बोल रहा हूं, जल्दी से
जल्दी भारत छोड़ो।

उपसभापति जी, आज का दिन हमारे लिए बहुत बड़ा क्रांतिकारी दिन है। अगर महात्मा गांधी जी ने 9 अगस्त, 1942 को "भारत छोड़ो" का नारा नहीं दिया होता, तो..(**व्यवधान**)..

श्री प्रमोद तिवारी (उत्तर प्रदेश): उपसभापति जी, इनका क्या नाम आ रहा है, जरा पढ़ लीजिए।

श्री रामदास अठावले: क्या हुआ?

एक माननीय सदस्य: स्मृति ईरानी जी का नाम आ रहा है। आप उनकी सीट पर खड़े हैं।

श्री रामदास अठावले: हां, मैं स्मृति ईरानी जी की जगह पर खड़ा हूं, पर मेरी पार्टी रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (ए) है और मेरी पार्टी बीजेपी दल के साथ है। कुछ सालों तक मैं आपके साथ रहा, अभी इनके साथ हूं। भारत को मजबूत बनाने के लिए, भारत की आज़ादी को मजबूत बनाने के लिए, जिन्होंने बलिदान दिए, उनके बलिदानों को याद रखने के लिए ...(**समय की घंटी**)... डिप्टी चेयरमैन सर, हम लोगों पर जिम्मेदारी है। जिन लोगों ने कुर्बानी दी है, ...(**समय की घंटी**)... तो भारत की आजादी को आंच नहीं पहुंचनी चाहिए। भारत की आजादी को मजबूत करने के लिए मेरा कांग्रेस ...(**व्यवधान**)...

श्री प्रमोद तिवारी: ऊपर अपना नाम देखिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री रामदास अठावले: मेरा निवेदन यह है ...(**समय की घंटी**)..

श्री उपसभापति: आपका टाइम हो गया, दो मिनट हो गए।

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय के राज्य मंत्री; तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मुख्तार अब्बास नक़वी): सर, इन्हें बीच-बीच में डिस्टर्ब किया गया, इसलिए थोड़ा, दो मिनट का टाइम इन्हें और देना चाहिए। Because of the name, इन्हें डिस्टर्ब किया गया। ...(**व्यवधान**)...

श्री रामदास अठावले: मेरा कहना यह है कि नरेंद्र मोदी जी की जो सरकार है, यह सरकार राष्ट्रवादी है, मतलब नरेंद्र मोदी जी राष्ट्रवाद को मजबूत कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... नरेंद्र मोदी जी हैं राष्ट्रवादी, मगर आप मत खेलो राजनीति। इसलिए काग्रेस वालों से मेरा कहना है कि आप बहुत दिनों तक इधर रहे हैं, मैं भी आपके साथ था, लेकिन अब नरेंद्र मोदी जी के साथ काम करने का मौका मिला है।*

श्री उपसभापति: आपका टाइम हो गया। Nothing more will go on record. It is not going on record. अठावले जी, बैठिए, बैठिए।

श्री राजीव शुक्ल (महाराष्ट्र): सर, इस तरह नॉन-सीरियस मजाकिया बातें कर-करके बहस का स्तर न गिराया जाए, प्लीज आप यह ध्यान रिखए।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I can't do anything. Now. Shrimati Rajani Patil. You have got only two minutes.

श्रीमती रजनी पाटिल (महाराष्ट्र): सर, मैं आपको धन्यवाद देना चाहती हूँ। ...(**व्यवधान**)... सर, आपने आज इस "अगस्त क्रांति दिन" पर एक ऐसे व्यक्ति को बोलने की परमिशन दी है,

---

* Not recorded.

[श्रीमती रजनी पाटिल]

जो स्वतंत्रता सेनानी के परिवार से आती है। जब आजादी की लड़ाई शुरू हुई थी, तब "गदर संगठन" में मेरे नाना जी क्रांतिवीर विष्णु गणेश पिंगले जी और करतार सिंह सराबा, इनको 1915 में लाहौर में फांसी दी गई थी। मैं उस परिवार से आती हूँ, जिनके माता-पिता ने जिंदगी में सबसे ज्यादा समय जेल में बिताया और जो गांधी जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चले। इसलिए मैं बोलना चाहती थी और आपने मुझे परमिशन दी, इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करती हूँ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You have got one more minute.

श्रीमती रजनी पाटिलः शुक्रिया, सर। जब 1942 में "भारत छोड़ो" का नारा गांधी जी ने दिया था, वह हमारे मुंबई में ग्वालिया टैंक मैदान में दिया था। गांधी जी, पंडित नेहरू जी, सरदार पटेल जी, मौलाना आजाद जी सहित सभी लोगों को दूसरे ही दिन जेल में डाला गया और आजादी की लड़ाई सर्व सामान्य ने, आम लोगों ने अपने कंधों पर ले ली। इस आजादी की लड़ाई के लिए हमारे भारत की जनता मर-मिटने के लिए तैयार हो गई। मैं इतना ही कहना चाहूंगी कि आज हम उन्हीं लोगों की वजह से, हमारे उन पुरखों की वजह से आजादी से रह रहे हैं। इस आजादी को हमें आगे चलाना है, इस आजादी को हमें सही मायने में सुरक्षित रखना है, यह हम सब का कर्त्तव्य है, सभागृह के हरेक सदस्य का कर्त्तव्य है। आज फिर जरूरत है कि उसी तन्मयता के साथ, उसी आत्मीयता के साथ हम इस जातिवाद, अलगाववाद, प्रदेशवाद, गरीबी, बेरोजगारी से लड़ें और अपने हिन्दुस्तान को आगे लेकर जाएं। इसके लिए सभी लोगों को साथ में आने की आवश्यकता है, मैं इस सदन के माध्यम से आपसे यही कहना चाहती हूँ और जिस विरासत से मैं आई हूँ, उसी विरासत को आगे लेकर हम काम करेंगे, यही मैं आश्वासन भी देना चाहती हूँ। धन्यवाद।

SHRI A. V. SWAMY (Odisha): Sir, I am going to share with you my experience as a child joining 'Quit India Movement'. I come from Koraput which is a tribal region, and there, my teacher was a staunch supporter of Gandhi's Quit India Movement. He said, "Achari, why don't you organize a group of people who could help the freedom fighters?" Thereafter, quite a good number of us joined together, and then, we found, that there is, what is called *Vanar Sena*, to assist our freedom fighters who are going to jail. But, after having joined it, I had an embarrassing moment which I wanted to share because we were told that Gandhiji says that one should not speak a lie any time, under whatever circumstances. We formally were engaged to carry letters for the underground freedom fighters. At that time, many of them had gone underground, and therefore, monkey- pedaling a bicycle, we used to go. One day, it so happened that I went to deliver the letters, and when I was returning, a very atrocious Circle Inspector of Police caught me. "Arey! Where had you been?" Then I said, "No, Sir, I am a sportsman." "What sportsman? In the morning at five-six o'clock, you go to do sports and all that." I said, "Yes, Sir." Then he marked something. At that time, we did not have computers for writing letters. We did not even have Odia typewriters. They were handwritten and cyclostyled. That ink he

found on my hand. Then he said, "Arey! You had gone for a stroll on bicycle. What is this?" Then he discovered that I took cyclostyled letters to deliver somewhere. He took me to the police station. He made me to lic on a bench. Then he asked me, "Where did you go?" I remembered what I was told by Gandhiji's followers that I should not speak a lie. My problem was I could not speak the truth. The letter which I carried was for a major meeting of a group of freedom fighters in the evening in a forest area and therefore, I could not speak the truth. If I spoke the truth, I knew what would have happened. Then he gave me a slap. I was only thinking of Gandhiji. If I speak the truth, Gandhians will be in jail and there will be a big setback to the Quit India movement. If I speak a lie, then I am going against Gandhiji. What should I do? During that period, by God's will, my pyjama got wet. That chap marked me and told the other policeman and said, "This fellow has done this, throw him out." And then I was sent out.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Swamyji, thank you. ...(*Interruptions*)... Swamyji, thank you for narrating this. ...(*Interruptions*)... Swamyji, we are happy that you participated in this. My congratulations to Swamyji. He is the one who participated in the Freedom Struggle. That is a great privilege and credit.

श्री हुसैन दलवई (महाराष्ट्र): सर, मुम्बई के अगस्त क्रांति मैदान पर 7 और 8 अगस्त को कॉफ्रेंस हुआ, जिसमें यह नारा दिया गया। उसके पहले दो कार्यकारिणी की मीटिंग्स थीं, लेकिन ऑल इंडिया कांग्रेस कमिटी की मीटिंग में यह नारा दिया गया। उस समय गांधी जी ने यह कहा कि मेरी दो शर्तें हैं। हमें उन दोनों शर्तों को आज भी ध्यान में रखना चाहिए।

(**सभापति महोदय** *पीठासीन हुए*)

एक शर्त यह थी, "किसी भी हालत में यह आन्दोलन अहिंसा के तत्व से होना चाहिए, मैं हिंसा को किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं करूँगा।" उनका दूसरा मुद्दा था कि इसमें किसी को भी किसी से द्वेष नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम ब्रिटिश गवर्नमेंट के खिलाफ लड़ रहे हैं, ब्रिटिश लोगों के खिलाफ नहीं, वहां की जनता के खिलाफ नहीं, इसलिए ब्रिटिश जनता से बिल्कुल द्वेष नहीं होना चाहिए। उन्होंने ये सारी बातें कहते वक्त यह कहा कि यह देश सबका है, सब लोगों का है और सबको लेकर चलना है। जब कांग्रेस पार्टी की स्थापना हुई, तब जाति, धर्म, वर्ण, रंग, लिंग, इन सारी बातों को अलग रख कर सबको मेम्बरशिप दी जाएगी, यह कहा गया था। हम लोगों ने अभी तक यही बात की, इसीलिए यह देश अभी तक एक है। जैसा हमारे हाउस के नेता ने कहा कि सभी जगह, जहां-जहां आजादी मिली, वहां आजादी टिकी नहीं, लेकिन हमारे यहां आजादी बरकरार रही, इसका कारण यह है कि सब लोग साथ में हैं। पाकिस्तान बनने के बाद भी मुसलमान यहां बड़ी पकड़ से रहा। इसका कारण, गांधी जी ने जो विचार दिया था, वह था। इसमें कई लोग ऐसे थे, जिनके जेल के अन्दर जाने के बाद सारी कांग्रेस पार्टी, कार्यकारिणी underground हो गई। उसके बाद एस.एम. जोशी जैसे हमारे महाराष्ट्र के नेता नाई बन कर वहां काम करते थे, वे underground थे। डॉक्टर लोहिया underground थे। डॉक्टर लोहिया को पकड़ने के बाद बर्फ के ऊपर सुलाया गया, तो भी उन्होंने कभी भी गलत बात नहीं की।

MR. CHAIRMAN: Thank you.

श्री हुसैन दलवईः सर, मैं अब समाप्त कर रहा हूँ। महाराष्ट्र में नाना पाटील के नेतृत्व में प्रति सरकार बनी, जिसमें वसंत दादा पाटील और जी.डी लाड जैसे लोग थे। बड़े पैमाने पर सारे समाज को लेते हुए यह काम हुआ। हम लोगों को यही बात लेकर चलना चाहिए। मुझे अच्छा लगा कि 70 साल के बाद आज कुछ बातें हमारे सारे दोस्तों के ध्यान में आ रही हैं कि हमारे पुरखों ने जो विरोध किया था, कांग्रेस के लोगों को गुंडा कहा था, वह अब नहीं होगा और सब साथ में रहेंगे, मैं ऐसा कहता हूँ। हम यहीं साथ में रहेंगे, तभी प्रगति होगी, progress होगी। मैं इतना ही कह कर अपनी बात समाप्त करता हूँ। धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Thank you. Please sit down. I now move the following Resolution. "This House:–

> Recalls that seventy five years ago Mahatma Gandhi called for the British to Quit India and gave the clarion call 'Do or Die' to the Indian people to end the British Rule;
>
> Observes on the 75th Anniversary of the 'Quit India Movement' that it is important to remember the heroic struggle of the Indian people- students, peasants, women, workers and Government officials who defied the brutal repression of the British Raj to launch mass satyagraha that shook the very foundation of the British rule;
>
> Acknowledges that this is also an occasion to recall with gratitude the sacrifices of millions of our people and salute the memory of thousands of Indians, who gave their lives for the freedom of India; and
>
> On this day solemnly takes a pledge to uphold and safeguard the values and ideals of the freedom movement and re-dedicate ourselves to build an India that is strong, self-reliant, inclusive, secular and democratic."

May I take that this Resolution is adopted unanimously?

ALL HON. MEMBERS: Yes.

MR. CHAIRMAN: The Resolution is adopted unanimously. The House is adjourned till 2.00 p.m.

The House then adjourned for lunch at seventeen minutes past one of the clock.

———